● वर्ष-3
● अंक-183
रायपुर, रविवार
10 मार्च 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› पढ़ाई में अव्वल भरतनाट्यम में ...

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किसान महासम्मेलन में भरी हुंकार

छत्तीसगढ़ के अंदर एक अद्भुत सामर्थ्य हैः सिंह

हिंदुस्तान में छत्तीसगढ़ धान का कटोरा एवं किसानों का गढ़ कहा जाता है-रक्षा मंत्री

रायपुर। देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किसान महासम्मेलन में कहा है कि छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनते ही यहां पर 100 दिन में ही, जो विकास पटरी से उतर चुका था, वह विकास अब फिर से पटरी पर लौट आया है। छत्तीसगढ़ राज्य पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने बनाया और विकास करने का काम भाजपा की सरकार ने किया था। लेकिन पिछले 5 वर्षों में यहां विकास के काम पूरी तरह से ठप हो गया था। छत्तीसगढ़ में भ्रष्टाचार और घोटाले का बोलबाला था। छत्तीसगढ़ को पिछले 5 वर्षों में कांग्रेस के लोगों ने बर्बाद किया है। छत्तीसगढ़ को सँवारने का सामर्थ्य भाजपा में है। रक्षा मंत्री श्री सिंह शनिवार को भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा द्वारा राजधानी के साइंस कॉलेज मैदान पर अहूत किसान महासम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि छत्तीसगढ़ की जनता ने भाजपा पर भरोसा जताते हुए प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाई है और छत्तीसगढ़ के में लंबे अरसे के बाद आदिवासी समाज का मुख्यमंत्री मिला है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ तेजी से विकास करेगा। छत्तीसगढ़ को हिंदुस्तान में धान के कटोरा के रूप में जाना जाता है। छत्तीसगढ़ के अंदर एक अद्भुत सामर्थ्य है। छत्तीसगढ़ किसानों का गढ़ है। हिंदुस्तान में छत्तीसगढ़ को किसानों का गढ़ माना जाता है। छत्तीसगढ़ का भाग्य हमें बनाना है तो हमें छत्तीसगढ़ के किसानों के भाग्य को बनाना पड़ेगा, तब जाकर छत्तीसगढ़ विकास की ऊँचाइयों को छू पाएगा। छत्तीसगढ़ की जनता मेहनतकश जनता है। श्री सिंह ने कहा कि छत्तीसगढ़ के चप्पे-चप्पे से वह परिचित हैं। छत्तीसगढ़ी संस्कृति से वह अच्छी तरह से परिचित हैं। किसान भाइयों की मेहनत से यह भारत धनवान होगा छत्तीसगढ़ की जनता के सामर्थ्य पर उन्हें भरोसा है। विकास को आप सबके सहयोग से भाजपा की सरकार फिर से आगे बढ़ाएगी। किसानों में वह सामर्थ्य है कि मिट्टी से सोना निकाल सकता है। भाजपा की सरकार कंधे से कंधे मिलाकर देश के किसान भाइयों के साथ खड़ी है। श्री सिंह ने कहा कि 2014 से पहले भाजपा की प्रतिबद्धता रही है- गांव गरीब और किसान, झुग्गी झोपड़ी का इंसान, बेरोजगार नौजवान और देश की माता और बहनों का सम्मान। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में किसान भाइयों के लिए काम हो रहे हैं और आज हालात पूरी तरह से बदलते जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जिस प्रकार से योजनाएँ बनाई हैं, उसके चलते हिंदुस्तान की 25 करोड़ जनता गरीबी रेखा से बाहर आ गई है। भारत के इतिहास में आज तक ऐसा पहले कभी नहीं हुआ है, यह रिपोर्ट नीति आयोग की है। श्री सिंह ने कहा कि एक बार फिर मोदी सरकार बनाएँ, एक भी व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे नहीं रहेगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वादा किया था कि देश में एक भी झोपड़ी रहने नहीं देंगे, सब लोगों को पक्का मकान मुहैया कराएंगे, हर घर में नल के द्वारा स्वच्छ जल मिलेगा। छत्तीसगढ़ की पिछली कांग्रेस सरकार ने इन सब योजनाओं को रोक कर रखा था। छत्तीसगढ़ के विकास के लिए कांग्रेस पार्टी ने अपनी तरफ से कुछ नहीं किया और चुनाव नजदीक आते देख छत्तीसगढ़ की जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए दिखावे के रूप में काम करने की कोशिश की। छत्तीसगढ़ की जनता अब जागरुक हो गई है। सॉइल हेल्थ कार्ड देने का काम भाजपा की सरकार कर रही है। हम 1 साल के भीतर प्रदेश के सभी किसानों को सॉइल हेल्थ कार्ड देंगे ताकि किसानों को पता चल सके कि उनके खेत की मिट्टी की हेल्थ कैसी है, मिट्टी में किस चीज की कमी है।

रक्षा मंत्री श्री सिंह ने कहा कि देशभर में भाजपा की सरकार ने 23 करोड़ से ज्यादा सॉइल हेल्थ कार्ड किसानों को दिए हैं। देश के किसान भाइयों को किसान सम्मान निधि के तहत 6 हजार रूपए प्रतिवर्ष देने का काम भाजपा की सरकार ही कर रही है। दुनिया में यूरिया की खाद 3000 रूपए प्रति बोरी मिलती है जबकि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश के किसान भाइयों को 300 रूपए मं प्रतिबोरी यूरिया देने का काम किया है। देश की महंगाई को रोकने का काम किसान भाइयों के खाद और बीज की कीमतों में कमी करने का काम मोदी सरकार ने किया है।

प्रदेश सरकार ने मोदी की गारंटी को पूरा करना प्रारंभ कर दिया है- साय

भाजपा किसान मोर्चा के महासम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि भाजपा किसानों की पार्टी है और भाजपा हमेशा किसानों के हित में फैसला लेने वाली पार्टी है। देश में कई वर्षों से कांग्रेस की सरकार रही है, लेकिन कांग्रेस पार्टी ने कभी किसानों के हित के लिए कोई काम नहीं किया। अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री बनते ही किसानों के हित के लिए फैसले लिए। किसान क्रेडिट कार्ड, फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री कृषक योजना जैसी योजनाओं के माध्यम से किसानों को उन्नत करने का काम अटलबिहारी वाजपेयी की सरकार ने किया जिसे आगे बढ़ते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार कर रही है।

किसानों के समग्र विकास एवं न्याय के लिए काम करेगी- देव

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने कहा कि आज का यह छत्तीसगढ़ के अन्नदाताओं का महासम्मेलन है। छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है पिछले 5 सालों में कांग्रेस की सरकार ने किसानों से झूठा वादा करके किसानों को परेशान करने का काम किया। भाजपा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी के अनुरूप किसानों के समग्र विकास एवं न्याय के लिए काम करेगी। भाजपा ने विधानसभा चुनाव में घोषणा की थी कि छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनते ही किसानों के कल्याण की दिशा में काम करेगी। भाजपा जो कहती है उसे करके दिखाती भी है।

अब देश के किसान संकल्प कर चुके हैं कि केंद्र में मोदी की सरकार बनाएंगे - चाहर

भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार चाहर ने किसान महासम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की जनता का विराट स्वरूप इस महासम्मेलन में दिखाई दे रहा है। जबसे उत्तरप्रदेश में 22 जनवरी को भगवान श्री रामलला के मंदिर की प्रण-प्रतिष्ठा हुई है, उसे पूरी दुनिया ने देखा है। आज दुनिया में हर तरफ भगवान श्री राम के नाम की जय हो रही है। श्री चाहर ने कहा कि आज पूरे देश की जनता छत्तीसगढ़ की जनता को धन्यवाद दे रही है कि 5 वर्षों में ही पुनः भाजपा की सरकार छत्तीसगढ़ में बनी है। यह किसान मोर्चा का महाकुंभ है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में किसानों की भलाई के लिए केंद्र की सरकार काम कर रही है।

महतारी वंदन योजना

70 लाख से अधिक महिलाओं के खाते में पहली किश्त का अंतरण आज

यह सतत चलने वाली योजना, चरण दर चरण भरे जाएंगे आवेदनः चौधरी

अब छोटी जरूरतों के लिए मातृ शक्ति को किसी से कुछ मांगने की जरूरत नहीः रजवाड़े

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुखिया विष्णुदेव साय के नेतृत्व में मोदी की गारंटी के अंतर्गत राज्य सरकार 100 दिनों के भीतर ही महतारी वंदन योजना का शुभारंभ करने जा रही है। रविवार को देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों योजना का वर्चुअल माध्यम से शुभारंभ होगा। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय रायपुर के साइंस कालेज मैदान में कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। राज्य के 146 विकासखंडों, जिला मुख्यालयों तथा नगरीय निकायों में एक साथ हितग्राहियों के खाते में डीबीटी के माध्यम से राशि का अंतरण किया जाएगा। छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, वित्त मंत्री ओपी चौधरी तथा महिला बाल विकास विभाग मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने योजना के शुभारंभ को लेकर विस्तार से जानकारी दी। महिला बाल विकास विभाग मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने इस संबंध में जानकारी देते हुए कहा है कि 10 मार्च को लगभग 70 लाख विवाहित महिलाओं को महतारी वंदन योजना का पैसा डीबीटी के माध्यम से उनके बैंक खाते में डाला जाएगा। इस योजना को लेकर महिलाओं में काफी उत्साह देखा जा रहा है। वे अब अपनी छोटी छोटी जरूरतों को आसानी से पूरा कर लेगी और इसके लिए उन्हें किसी से कुछ मांगने की जरूरत नहीं होगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एक और गारेंटी पूरी करने जा रही है। वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने योजना के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की सरकार किसान ,गरीब,आम जनता, महिलाओं, युवाओं के उत्थान के लिए निरंतर कार्य कर रही है। मोदी की गारंटी के अंतर्गत राज्य सरकार 100 दिनों के भीतर ही अपना एक और वायदा पूरा करने जा रही है। उन्होंने कहा कि विष्णुदेव साय की सरकार पूरी तरह से समर्पित होकर आम जनता के हित में काम कर रही है। श्री चौधरी ने जानकारी देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी 10 मार्च को वर्चुअल माध्यम से दोपहर 2 बजे महतारी वंदन योजना शुभारंभ कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे और योजना की लाभांवित हितग्राहियों को संबोधित करते हुए पहले चरण की राशि का अंतरण करेंगे।

...अब मोदी ने की असम जाने की अपील

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने असम स्थित काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान का दौरा किया, जिसको लेकर सोशल मीडिया पोस्ट पर उन्होंने कुछ तस्वीरें साझा करते हुए अपने अनुभवों को लिखा। एक्स पर फोटो साझा करते हुए उन्होंने लिखा कि मैं आप सभी से काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा करने और उसकी सुंदरता का अनुभव करने के लिए यहां आने का आग्रह करता हूं। यह एक ऐसी जगह है जहां कि यात्रा आपकी आत्मा को समृद्ध करती है। यह आपको असम से गहराई से जोड़ती है।

प्रमुख समाचार

चुनाव आयुक्त अरुण गोयल का इस्तीफा, राष्ट्रपति ने किया मंजूर

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव को लेकर बढ़ी सरगर्मियों के बीच चुनाव आयुक्त अरुण गोयल ने इस्तीफा दे दिया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उनका इस्तीफा मंजूर भी कर लिया है। सरकार की तरफ से एक अधिसूचना जारी कर इसकी जानकारी दी गई है। अरुण गोयल का इस्तीफा तब सामने आया है, जब हाल ही में लोकसभा चुनाव होने हैं। हालांकि उनके इस्तीफे की वजह अभी सामने नहीं आई है। सरकार ने अधिसूचना में बताया कि मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त (नियुक्ति, सेवा की शर्तें और कार्यालय की अवधि) अधिनियम, 2023 की धारा 11 के खंड (1) के तहत मिले अधिकारों को उपयोग करते हुए राष्ट्रपति को अरुण गोयल का इस्तीफा स्वीकार कर लिया है जो तत्काल प्रभावी भी हो गया है। इससे पहले, चुनाव आयुक्त अनूप पांडे फरवरी में सेवानिवृत्त हो गए थे। कयास लगाए जा रहे हैं कि गोयल के इस्तीफे से चुनाव की तिथियों पर असर पड़ सकता है। अरुण गोयल के इस कदम के बाद अब चुनाव आयोग में दो रिक्तियां हो गई हैं। 1985 बैच के आईएएस अधिकारी अरुण गोयल ने 21 नवंबर, 2022 को चुनाव आयुक्त का प्रभार ग्रहण किया था।

बंगाल में लागू हो राष्ट्रपति शासनः गंगोपाध्याय

कोलकाता। कलकत्ता उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता अभिजीत गंगोपाध्याय ने शनिवार को कहा कि पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाया जाना चाहिए क्योंकि राज्य में कानून व्यवस्था खस्ताहाल है। गंगोपाध्याय ने गुरुवार को भाजपा में शामिल होने के बाद सिलीगुड़ी में अपनी पहली सार्वजनिक रैली को संबोधित करते हुए यह टिप्पणी की। उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ने कहा कि राज्य की कानून-व्यवस्था जर्जर है। पुलिस वरिष्ठों के आदेश पर लोगों को परेशान करती है। मुझसे पूछा गया कि क्या बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाया जाना चाहिए। मैं हां कहता हूं। अभिजीत गंगोपाध्याय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली में हिस्सा लेने के लिए सिलीगुड़ी में थे। इस महीने यह प्रधानमंत्री की राज्य की तीसरी यात्रा होगी। उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की भी आलोचना की और कहा कि वह संदेशखली नहीं गईं। उन्होंने संदेशखाली को कवर करने वाले निर्वाचन क्षेत्र बशीरहाट से टीएमसी सांसद नुसरत जहां पर भी कटाक्ष किया.

भाजपा-टीडीपी और जनसेना का गठबंधन तय

नई दिल्ली। कई दिनों की अटकलों के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने शुक्रवार को आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम पार्टी और जन सेना पार्टी के साथ अपना गठबंधन पक्का कर लिया। टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू ने मीडिया से बातचीत के दौरान इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव के दौरान गठबंधन को आंध्र प्रदेश में क्लीन स्वीप मिलेगा। एन चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि बीजेपी, टीडीपी, जन सेना के बीच चुनाव में गठबंधन के लिए सहमति बन गई है। बताया जा रहा है कि कि दोनों दलों का एक संयुक्त बयान जल्द ही जारी किया जाएगा क्योंकि 17 मार्च को टीडीपी-भाजपा मीडिया सम्मेलन होने वाला है। आंध्र प्रदेश चुनाव और लोकसभा चुनाव दोनों के लिए बीजेपी-टीडीपी-जनसेना गठबंधन को अंतिम रूप दे दिया गया है, जो एक साथ होने की उम्मीद है। चंद्रबाबू नायडू ने गठबंधन के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि बीजेपी, टीडीपी, जनसेना पार्टी के बीच चुनाव में गठबंधन की सहमति बन गई है।

भारत की अष्टलक्ष्मी विकास में अग्रणी बनेगीः मोदी

नई दिल्ली। हर स्तर पर विकास, हर दिशा में विकास... जो देगा एक खूबसूरत विकसित देश। भारत को विकसित बनाने के संकल्प के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के यशस्वी नेतृत्व में देश नई ऊंचाइयों को छू रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मजबूत नेतृत्व में असम और पूर्वोत्तर भी विकास और प्रगति की सफल यात्रा में अग्रसर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अथक प्रयासों की बदौलत ही भारत की %अस्थलक्ष्मी% सामाजिक आर्थिक विकास में अग्रणी बनेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि 21वीं सदी में देश के विकास का इंजन बनेगा। पूर्वोत्तर भारत को पीएम मोदी ने अष्टलक्ष्मी की संज्ञा दी है। पीएम मोदी के करकमलों से ही 17,500 करोड़ रुपये की लागत से ही 12 विकास परियोजनाओं की शुरुआत की गई है। प्रधानमंत्री ने जोरहाट में एक कार्यक्रम में स्वास्थ्य, तेल और गैस, रेलवे तथा आवासीय क्षेत्र से जुड़ी परियोजनाओं का उद्घाटन किया है। इन परियोजनाओं के जरिए देश के लाखों लोगों को लाभान्वित किया जा सकेगा। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री आवासीय योजना की शुरुआत की गई थी। केंद्र सरकार की प्रेरणा से राज्य सरकार भी प्रधानमंत्री आवासीय योजना ग्रामीण के सफल कार्यान्वयन के लिए लगातार अथक प्रयास कर रही है। राज्य में पांच लाख पचपन हजार पांच सौ पचपन लाभार्थियों का घरों में गृह प्रवेश हुआ है।

कदम-कदम पर लूट रही टीएमसी सरकारः मोदी

सिलीगुड़ी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भ्रष्टाचार और वंशवादी राजनीति के मुद्दे पर तृणमूल कांग्रेस पर हमला बोला और कहा कि भारत में विपक्षी दल जैसे टीएमसी और कांग्रेस केवल अपने परिवारों के विकास के बारे में चिंतित हैं। इसके साथ ही उन्होंने संदेशखाली के बहाने भी ममता बनर्जी और उनकी सरकार पर निशाना साधा। सिलीगुड़ी में मोदी ने कहा कि मैं जिस तरह का जीवन जी-कर यहां आया हूं, मैंने देश की अनेकों माताओं को छोटी-छोटी सुविधाओं के लिए संघर्ष करते हुए देखा है। इसलिए मैं शौचालय, नल से जल, मुफ्त बिजली कनेक्शन, बैंक का खाता, गर्भावस्था के समय आर्थिक मदद... ऐसी हर बात पर ध्यान रखता हूं, जोर दे रहा हूं। उन्होंने कहा कि आज पूरा देश कह रहा है, गांव-गांव से आवाज उठ रही है, बंगाल के कोने-कोने से आवाज उठ रही है- अबकी बार 400 पार। मोदी ने कहा कि जो परिवार का सदस्य होता है, वो आपके सुख-दुख का भी साथी होता है। मैं जानता हूं कोरोना के दौरान मेरे गरीब परिवार कितनी बड़ी चिंता से घिरे हुए थे, इसलिए मोदी ने देश के अपने परिवारजनों को मुफ्त राशन देने की योजना शुरू की। मेरा मकसद था कि किसी गरीब के घर का चूल्हा बुझना नहीं चाहिए, किसी गरीब के घर के बच्चे को भूखा नहीं सोने देंगे।

उत्तर बनाम दक्षिण का पैंतरा, क्षेत्रीय दलों के बदलते समीकरणों के कारण बदल रही है जमीनी हकीकत

ज्योति भास्कर

कर्नाटक और तेलंगाना के चुनावों के बाद भाजपा के खराब प्रदर्शन और कांग्रेस की बड़ी सफलता के लिए उत्तर और दक्षिण भारत की राजनीतिक संस्कृति के अंतर को जिम्मेदार माना गया था। तब से यह तर्क दिया जाने लगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास के मुद्दे और भाजपा की हिंदुत्व की राजनीति दक्षिण में नहीं चल सकती। इस आख्यान का इस्तेमाल लोगों को यह समझाने के लिए किया गया कि दक्षिण की 130 लोकसभा सीटों पर भाजपा आसानी से कब्जा नहीं कर सकती, चाहे प्रधानमंत्री मोदी कितना भी जोर लगा लें।

यह ऐतिहासिक रूप से सच है कि आपातकाल के बाद 1977 में जब इंदिरा गांधी का पतन हुआ था, तब कांग्रेस को दक्षिण भारत में ही शरण मिली थी। यहां तक कि 2014 और 2019 में जब कांग्रेस सबसे खराब स्थिति में पहुंच गई, तब भी दक्षिण भारत ने गांधी परिवार को मजबूत शरण दी थी। इससे भी पहले, जब 2004 और 2009 में कांग्रेस ने केंद्र में वापसी की कोशिश की, तो दक्षिण के मतदाताओं ने भरपूर समर्थन दिया था। लेकिन आज इस बात में संदेह है कि दक्षिण में वैसी ही स्थिति बनी हुई है, क्योंकि जमीनी वास्तविकता बदल रही है। दक्षिण में क्षेत्रीय दलों की भूमिका प्रमुख होती है। निस्संदेह कर्नाटक एवं तेलंगाना की जीत ने कांग्रेस को बेहद जरूरी गतिशीलता प्रदान की है। फिर भी कांग्रेस दक्षिण को हल्के में नहीं ले सकती। अब उसे कई नई और चतुर क्षेत्रीय पार्टियों से जूझना होगा। भाजपा ने भी मतदाताओं तक पहुंचने की कोशिश नहीं छोड़ी है। भाजपा उत्तरी और पश्चिमी भारत में अपने चरम पर पहुंच चुकी है, इसलिए प्रधानमंत्री दक्षिण में दृढ़तापूर्वक प्रयास कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने पिछले दो महीने में दक्षिण भारत की चार विस्तृत यात्राएं की हैं। चुनाव की घोषणा होने पर वह दक्षिण में और ज्यादा प्रचार करेंगे। विधानसभा चुनाव हारने के बावजूद कर्नाटक में अब भी भाजपा के लिए काफी संभावनाएं हैं।

2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 28 में से 25 सीटें जीती थीं, जबकि कांग्रेस मात्र एक सीट जीत पाई थी। अब सबकी निगाहें इस पर टिकी हैं कि कांग्रेस विधानसभा चुनाव की अपनी जीत (135 सीटों और 42.88 फीसदी वोट) और भाजपा के विधानसभा प्रदर्शन (66 सीट एवं 36 फीसदी वोट) का लोकसभा में कैसे उपयोग कर पाती हैं। देवगौड़ा की पार्टी जनता दल (एस) के साथ गठबंधन करके भाजपा ने पारंपरिक रूप से त्रिकोणीय मुकाबले को सीधी लड़ाई में बदल दिया है और उसे वोक्कालिगा और लिंगायत वोटरों के एकसाथ आने की उम्मीद है। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने राज्य पार्टी का नेतृत्व येदियुरप्पा खेमे को सौंपकर एक सुधार किया है। माना जाता है कि मोदी फैक्टर लोकसभा चुनावों में भाजपा को बढ़त दिला सकता है, क्योंकि प्रधानमंत्री राज्य के मतदाताओं के बीच लोकप्रिय बने हुए हैं।

तमिलनाडु में द्रमुक और कांग्रेस समेत उसके अन्य सहयोगियों के लिए एक परीक्षा होगी कि क्या वह पिछले लोकसभा चुनाव (39 में से 38 सीटें) और विधानसभा चुनाव (234 में से 159 सीटें) की तरह शानदार प्रदर्शन कर पाएगी। इस बार स्टालिन सरकार के खिलाफ भाई-भतीजावाद एवं भ्रष्टाचार के आरोप हैं। सत्तारूढ़ पार्टी के नेताओं के खिलाफ ड्रग तस्करों से मिलीभगत के कथित आरोप भी हैं। शीर्ष द्रमुक मंत्रियों के भ्रष्टाचार को दबाने के लिए सनातन धर्म के खिलाफ उदयनिधि का बयान भी द्रमुक के पक्ष में काम नहीं कर सका। मुख्य विपक्षी पार्टी अन्नाद्रमुक के. अन्नामलाई के नेतृत्व वाली भाजपा से पिछड़ गई है। अन्नामलाई के नेतृत्व में भाजपा को द्रमुक से लड़ाई करने के लिए नया जोश मिला है। अन्नाद्रमुक ने हाल ही में भाजपा से गठबंधन तोड़ लिया है, जो अनुमानित रूप से 13 फीसदी अल्पसंख्यक मतों को द्रमुक से अलग करने के लिए था। इसके विपरीत मोदी ने काशी तमिल संगमम के जरिये भाजपा के हिंदुत्व और तमिल परंपरा के बीच एक भावनात्मक एवं सांस्कृतिक संबंध जोड़ने का प्रयास किया है।

तेलंगाना में कांग्रेस की रणनीतिक बढ़त और आत्मविश्वास से मोदी निश्चिंत हैं। भाजपा का दावा है कि तेलंगाना में ज्यादा बदलाव नहीं दिखेगा, क्योंकि कांग्रेस बीआरएस से अलग नहीं है, जो अब भी हार के सदमे से उबर नहीं पाई है। भाजपा के लिए सकारात्मक बात यह है कि वह विधानसभा चुनाव में तीसरे स्थान पर रही, जो कि उसका अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा ने वहां 17 में से चार सीटें जीती थीं। भाजपा-आरएसएस के आख्यान को जमीनी स्तर पर उतारने के लिए तेलंगाना का सामाजिक चरित्र अनुकूल है। वहां मुस्लिम आबादी 15 फीसदी के करीब है, जो निजामाबाद जैसे जिलों में केंद्रित है, जहां भाजपा ने 2019 में मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी के. कविता को हराया था।

मोहला मानपुर में पत्ता तोड़ने गए ग्रामीण को लगी गोली, जांच में जुटी पुलिस

मोहला मानपुर। नवगठित जिला मोहला मानपुर में जंगल में पत्ता तोड़ने गए शख्स को गोली लग गई। इसके बाद आनन-फानन में शख्स को अस्पताल में भर्ती कराया गया। फिलहाल शख्स का इलाज जारी है। चिकित्सकों की मानें तो शख्स के सीने बंदूक का छर्रा लग गया है। हालांकि अब तक ये नहीं पता चल पाया है कि बंदूक किसने चलाई थी।

ये है पूरा मामला- दरअसल, ये पूरा मामला जिले नवगठित जिला मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी के खड़गांव थाना क्षेत्र का है। बोदरा गांव के रहने वाले 45 वर्षीय सगुन सिंह सलामे जंगल में पत्ता तोड़ने गए थे।पत्ता तोड़ने के दौरान सगुन को गोली चलने की आवाज सुनाई दी। सगुन सिंह वहीं गिर गया। घर नहीं लौटने पर ग्रामीणों ने जंगल में सगुन सिंह की तलाश की, तो सगुन जंगल में बिहोशी की हालत में पड़ा मिला। आनन-फानन में सगुन को अस्पताल में भर्ती कराया गया।

शनिवार सुबह खड़गांव थाना में एक रिपोर्ट आई थी कि एक व्यक्ति शाम को पत्ता तोड़ने गए थे, जो कि घर नहीं आए। गांव वालों ने ढूंढा तो वह घायल अवस्था में पड़ा हुआ था। उसके सीने में चोट लगी थी। उनका कहना है कि यह पत्ता तोड़ने गए थे। कुछ सीने में लगा और वो बेहोश हो गए। फिलहाल शख्स का इलाज जारी है। पूरे मामले में पुलिस जांच कर रही है।- रत्ना सिंह, एसपी, मोहला मानपुर, अंबागढ़ चौकी

जांच में जुटी पुलिस- चिकित्सकों ने बताया कि सगुन के सीने में छर्रा फंसा हुआ है। प्राथमिक उपचार के बाद सगुन को मेडिकल कॉलेज अस्पताल राजनांदगांव रेफर कर दिया गया।पूरे मामले में पुलिस यह स्पष्ट नहीं बता पा रही है कि ग्रामीण पर नक्सलियों ने गोली चलाई है या फिर किसी और ने। फिलहाल मामले में पुलिस जांच की बात कह रही है।पुलिस नक्सली घटना सहित अन्य एंगल से मामले की जांच कर रही है।

अवैध परिवहन एवं उत्खनन करते पाये जाने पर 4 वाहन जप्त

जांजगीर-चांपा। कलेक्टर श्री आकाश छिकारा के निर्देशन में खनिज विभाग के सहायक उडनदस्ता दल प्रभारी श्री पी डी जाडे एवं टीम द्वारा जिला जांजगीर चांपा के देवरघटा, भादा में खनिजों के अवैध परिवहन, भंडारण करने वाले वाहनों, स्थानों का औचक जांच किया गया।

खनिज अधिकारी श्री हेमंत चेरपा ने बताया कि जांच के दौरान जिले में अवैध परिवहन करने वाले देवरघटा क्षेत्र से खनिज रेत के 02 प्रकरण (02 हाईवा), एवं भादा क्षेत्र से 02 प्रकरण (02 हाईवा) के प्रकरण दर्ज किया गया। इस प्रकार जिले में खनिजों के अवैध परिवहन करने वाले कुल 04 वाहनों को जप्त कर प्रकरण दर्ज किया जाकर खनिज नियमो के अंतर्गत कार्यवाही की जाएगी।

कलेक्टर के निर्देशानुसार जिले में खनिज के अवैध उत्खनन, परिवहन, भण्डारण पर प्रभावी नियंत्रण हेतु जिला स्तरीय टास्क फोर्स द्वारा विशेष अभियान चलाकर निरन्तर जाँच किया जा रहा है। अवैध उत्खननकर्ताओं, परिवहनकर्ताओं, भण्डारणकर्ताओ के विरूद्ध छत्तीसगढ़ गौण खनिज नियमावली 2015 के नियम 71 तथा खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम 1957 की धारा 21 के तहत दण्डात्मक कार्यवाही की जावेगी।

कबीरधाम में गन्ने की खेत में लगी आग झुलसने से किसान की हालत गंभीर

फायर ब्रिगेड ने पाया आग पर काबू

कबीरधाम। पिपरिया थाना इलाके के पपरिया नगर में गन्ने की खेत में अचानक आग लग गई। आग लगने की सूचना जैसे ही खेत के मालिक को मिली वो तुरंत मौके पर पहुंच गया। अपनी जलती फसल को देख किसान बेकाबू हो गया और खुद ही आग बुझाने में जुट गया। आग इतनी भयंकर थी कि देखते ही देखते पूरे खेत में फैल गई। खेत का मालिक आग बुझाने के दौरान खुद आग की पलटों में आकर झुलस गया।

खेत में आग लगने की खबर जैसे ही गांव वालों को मिली सभी लोग मौके पर पहुंच गए। खेत के पास ही ट्यूबवेल था लिहाजा किसानों ने वहां से पानी लाकर आग को बुझाने की कोशिश की। गर्मी होने के चलते आग बुझने का नाम नहीं ले रही थी। किसानों ने तुरंत आग की खबर फायर ब्रिगेड की टीम को दी। जबतक फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंचती तबतक खेत का मालिक बुरी तरह से आग में झुलस चुका था। पीड़ित किसान को अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

गर्मी आते ही आग लगने की घटनाएं बढ़ी

गर्मी के दिनों में अक्सर आग लगने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। किसानों का कहना है कि घायल किसान चंद्रिका साहू की दो एकड़ में लगी फसल पूरी तरह से तबाह हो गई। आग कैसे लगी ये फिलहाल पता नहीं चल पाया है। कई बार लापरवाही या फिर शरारत के चलते भी इस तरह की घटनाएं सामने आते रहती हैं। हादसे के बाद गांव में मातम का माहौल है।

गौ हत्या पर अब शंकराचार्य की सड़क पर लड़ाई

गौ हत्या विरोध में धरने पर बैठेंगे सनातनियों के सबसे बड़े धर्मगुरु

भिलाई। गौ हत्या के विरोध में और गौमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा दिलाने को लेकर उत्तराम्नाय ज्योतिषपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामि अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज अब सड़क की लड़ाई लड़ेंगे। इस संकल्प को पूरा करने के लिए सनातनियों के सबसे बड़े धर्मगुरु अब सड़क पर उतरेंगे। इसकी शुरुआत वे भिलाई से करेंगे और 10 मार्च को सुबह 10 बजकर 10 मिनट पर 10 मिनट के लिए संकेत स्वरूप धरना देंगे। उन्होंने सभी देशवासियों से अपने-अपने स्थानों पर रहते हुए इसके लिए 10 मिनट के सांकेतिक भारत बंद का आह्वान भी किया है।

शंकराचार्य के मीडिया प्रभारी अशोक साहू ने बताया पूज्य गुरुदेव स्वामि अविमुक्तेश्वरानंद महाराज अपने आठ दिवसीय प्रवास पर छत्तीसगढ़ में हैं। इस प्रवास के दौरान उन्होंने प्रदेश के विभिन्न जिलों में आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों में पहुंचकर गौमाता को राष्ट्रमाता घोषित कराने चल रहे आंदोलन के लिए अपने-अपने स्थानों में रहकर सनातनियों से समर्थन मांगा है।

बता दें पूर्व में ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा वृंदावन में गौ संसद का आयोजन कर गौमाता राष्ट्रमाता आंदोलन की शुरुआत की गई थी। फिर दिल्ली के एक सभागार में त्रिदिवसीय गौ संसद का आयोजन कर इससे संबंधित मांगपत्र मीडिया के समक्ष जारी किया गया था। इस आंदोलन में चारों पीठो के शंकराचार्यों की सहमति है।

महाराजश्री ने 10 मार्च को सुबह 10 बजकर 10 मिनट पर 10 मिनट के लिए अपने अपने स्थानों पर रहते हुए भारत बंद का आह्वान किया है। जिसे लेकर पूरे भारत के गौभक्त अपने-अपने स्तर पर अहिंसक रूप से 10 मिनट सड़क पर उतरकर भारत बंद का समर्थन करेंगे। प्रत्येक सनातनी गौमाता के लिए 10 मिनट के लिए अपने-अपने घरों से निकलकर कहेंगे दस दस दस, गौहत्या बस। इसी कड़ी में ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य 10 मार्च को भिलाई शहर में रहेंगे वे भिलाई स्थित छावनी चौक नन्दनी रोड पर 10 मिनट का धरना प्रदर्शन करेंगे।

धरना प्रदर्शन में मुख्यरूप से ज्योतिर्मठ के सीईओ चंद्रप्रकाश उपाध्याय, ब्रह्मचारी डॉ। इंदुभवानंद, आईपी मिश्रा, धर्मेन्द्र यादव सहित गौभक्त की उपस्थिति रहेगी।

ये गुरुजी तो 'मुन्नाभाई' निकले ! छात्रों को मिल रहा वीआईपी ट्रीटमेंट

शिक्षक ने अपने चेहते छात्रों को बोर्ड परीक्षा में धड़ल्ले से करवाई नकल

खैरागढ़। जिले से हैरान करने वाला मामला सामने आया है। जहां 10वीं बोर्ड की परीक्षा में मुन्नाभाई के तर्ज पर गुरुजी अपने चहेते छात्रों को नकल करवा रहे हैं, जिसकी शिकायत आज तीसरे पेपर के दिन बच्चों ने ज़िला शिक्षा अधिकारी से उनके कार्यालय पहुंचकर की।

एक तरफ देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी छात्र-छात्राओं को बोर्ड परीक्षा के लिए टिप्स देते हुए परीक्षा पे चर्चा करते हैं तो वहीं खैरागढ़ के स्वामी आत्मानंद आदर्श कन्या विद्यालय में शिक्षक अपने चहेते छात्रों को 10वीं के बोर्ड परीक्षा में धड़ल्ले से नकल करवा रहे हैं। धड़ल्ले से हो रही नकल से आहत छात्र-छात्राएं आज परीक्षा के बाद शिकायत करने ज़िला कार्यालय पहुंचे। जहां उन्होंने ज़िला शिक्षा अधिकारी को कलेक्टर के नाम शिकायत पत्र दिया और अपनी आप बीती बताई।

पीड़ित छात्र बताते हैं कि पहले हुए दो परीक्षाओं में भी शिक्षक द्वारा कुछ विशेष छात्रों को वीआईपी ट्रीटमेंट दिया जा रहा है। दसवीं की परीक्षा का आज तीसरा पेपर है, आज भी उन्हीं छात्रों को शिक्षक द्वारा नक़ल के पर्चे दिए गए। छात्रों की मानें तो शिक्षक को किसी का फ़ोन आता है और वो फ़ोन पर बच्चे के पेपर के बारे में पूछता है, जिसके बाद तुरंत शिक्षक बच्चों की उत्तर पुस्तिका देखता है। अगर बच्चे ने कुछ नहीं लिखा है तो शिक्षक उसे लिखने के लिये पर्चे देता है। छात्रों के इस आरोप से शिक्षा विभाग की कार्यशैली पर कई सवाल खड़े होते हैं। अगर शिक्षकों द्वारा ऐसे ही नक़ल करवा कर मुन्नाभाई बनाए जाएंगे तो भारत का भविष्य कहलाने वाले ये प्रतिभाशाली बच्चे देश में कहां अपनी जगह बना पाएंगे। फ़िलहाल ज़िला शिक्षा अधिकारी ने केंद्राध्यक्ष को तत्काल प्रभाव से हटा दिया है और जांच करवाने की बात की है। लेकिन क्या केंद्राध्यक्ष को हटाने मात्र से शिक्षा विभाग की लचर व्यवस्था का सुधार हो पाएगा या आरोपियों की जांच कर कठोर कार्रवाई करना ही छात्रों को न्याय दिला पाएगा।

लाल आतंक का खौफ! सता रहा जान का खतरा

चुनाव में प्रचार के लिए अंदरूनी इलाकों में जाने से कतरा रहे नेता

जगदलपुर। बस्तर में सत्ता परिवर्तन के बाद नक्सलियों की बौखलाहट बढ़ गई है और अब भाजपा के नेताओं की हत्या लगातार नक्सली कर रहे हैं। बीते सप्ताह भर में बीजापुर जिले में ही दो भाजपा नेताओं की हत्या नक्सलियों ने की है, जिसको देखते हुए अब सभी नेताओं में भय का माहौल है। नेताओं के लिए सबसे बड़ी चिंता यह है कि लोकसभा चुनाव के समय में प्रचार प्रसार करने अंदरूनी इलाकों में जाने से जान का खतरा सता रहा है।

दरअसल, सरकार बनते ही डिप्टी सीएम और गृहमंत्री विजय शर्मा नक्सलियों से बातचीत करने का प्रस्ताव रखा, जिस पर नक्सलियों की तरफ से भी कुछ शर्तों के साथ बातचीत का प्रस्ताव स्वीकारा। हालांकि इसके आगे इस बातचीत को लेकर कोई भी पहल नहीं की गई। पर अब नक्सली भाजपा नेताओं पर अपना खुन्नस निकालते नजर आ रहे हैं।

भाजपा प्रवक्ता संजय पांडे ने कांग्रेस के ऊपर आरोप लगाते हुए कहा कि 5 साल कांग्रेस की सरकार में नक्सली अपनी ताकत बढ़ाए उसी का परिणाम सामने आ रहा है। जब कांग्रेस सरकार में थी, तब भी भाजपा के नेताओं की टारगेट किलिंग की जा रही थी और अब जब सरकार बदल गई है और सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए जा रहे हैं, जगह-जगह कैंप खोला जा रहा है। इसी फ्रस्ट्रेशन में नक्सली भाजपा के नेताओं की हत्या कर रहे हैं। इससे खतरा सिर्फ भाजपा को नहीं, बल्कि कांग्रेस के नेताओं को भी है।

संजय पांडे ने बताया कि लोकसभा चुनाव प्रचार में नेताओं को जहां तक जाने की अनुमति होगी, वही तक जाया जाएगा। साथी चुनाव प्रचार के समय में अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था की जाएगी। ताकि आखिरी गांव तक हम पहुंच सकें और लोकसभा चुनाव में बढ़त प्राप्त हो।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

महिलाओं के खाते में आएगी महतारी वंदन की पहली किश्त

महासमुंद। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 10 मार्च को प्रदेश की राजधानी रायपुर के साथ सभी जिला मुख्यालय, ब्लॉक मुख्यालय, नगरीय निकाय क्षेत्रों में महतारी वंदन सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी राज्य मुख्यालय, जिला मुख्यालय, ब्लॉक मुख्यालय एवं नगरीय निकायों में आयोजित कार्यक्रमों से सीधे वर्चुअल जुड़कर लोगों को संबोधित करेंगे और हितग्राहियों से बात करेंगे। इस अवसर पर महतारी वंदन योजना के तहत प्रदेश की 70 लाख से अधिक महिलाओं के साथ साथ महासमुंद के 3 लाख से अधिक महिलाओं के खाते में डी.बी.टी. के माध्यम से पहली किश्त का अंतरण किया जाएगा। इससे प्रत्येक माह महिलाओं के खाते में एक हजार रूपये आएंगे। कलेक्टर श्री प्रभात मलिक ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए निर्देश दिए हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यक्रम अधिकारी श्री समीर पांडेय ने बताया कि स्थानीय शंकराचार्य भवन में दोपहर 11 बजे से जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित होगा।

दार्शनिक स्थल पर चलाया गया सफाई अभियान

सूरजपुर। जनपद पंचायत-भैयाथान की ग्राम पंचायत पहाड़अमोरनी के दार्षनिक स्थल सारासोर में आदरणीय कलेक्टर श्री रोहित व्यास एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती कमलेष नंदनी साहू की उपस्थिति में स्वच्छ भारत मिषन ग्रामीण के तहत सामूहिक स्वच्छता श्रमदान का आयोजन किया गया। महाषिवरात्री के अवसर पर उक्त दार्षनिक स्थल में विषाल मेले का आयोजन प्रतिवर्ष होता है। मेले के आयोजन पश्चात उक्त स्थल पर अत्यधिक मात्रा मे सुखा कचरा प्लास्टिक, कागज इत्यादि का खुले में बिखरे पड़े होते है। सामूहिक स्वच्छता श्रमदान में समस्त फैले सूखे कचरे को एकत्रित कर स्वेच्छाग्राहियों के माध्यम से पृथककरण हेतु एस.आर.एल.एम. शेड तक पहुंचाया गया। जहां इसके सुरक्षित निपटान हेतु प्रक्रिया किया जायेगा। कार्यक्रम के अंत में कलेक्टर द्वारा मंदिर समिति के समस्त सदस्यों को भविष्य में लगने वाले मेले में दुकानदारों को स्वयं का डस्टबिन रखने पर ही दुकान लगाने की अनुमति प्रदान किये जाने और मंदिर समिति को साफ सफाई हेतु विशेष ध्यान देने के निर्देश दिये गये।

पशुधन मेले में उन्नत नस्ल के पशुओं का हुआ प्रदर्शन

कोरिया। बैकुण्ठपुर विकासखण्ड के शासकीय माध्यमिक शाला, कंचनपुर में विगत दिनों 6 व 7 मार्च को दो दिवसीय जिलास्तरीय किसानों व पशुपालकों की संगोष्ठी सहित पशु मेले का आयोजन पशु चिकित्सा विभाग द्वारा किया गया था। जानकारी के मुताबिक करीब 100 किसानों / पशुपालकों द्वारा उन्नत नस्ल की गाय, बछिया, भैंस, पड़िया, बकरे -बकरियों, बैल-भैंसा जोड़ी एवं मुर्गा-मुर्गी सहित अन्य पक्षियों का प्रदर्शन मेले में लगाए थे। मेले में पहुंचे जनप्रतिनिधियों ने प्रदर्शन हेतु लाए गए पशु, पक्षियों का अवलोकन किया। विभागीय अधिकारियों द्वारा किसानों / पशुपालकों के सामने धान पैरा का यूरिया उपचार तथा अजोला उत्पादन का प्रदर्शन कर इसकी जानकारी व लाभ के बारे में जानकारी दी। पशु चिकित्सा विभाग में पदस्थ उपसंचालक डॉ. श्रीमती विभा सिंह बघेल ने शासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं एवं गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पशुपालकों से अपील करते हुए कहा कि विभागीय योजनाओं का लाभ लें।

महिला दिवस के उपलक्ष्य में खेलकूद स्पर्धा का आयोजन

अम्बिकापुर। महिलाओं के सम्मान में प्रतिवर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। खेल एवं युवा कल्याण विभाग सरगुजा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में तीनदिवसीय बालिका एवं महिला खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन 06 से 08 मार्च 2024 तक अम्बिकापुर में किया गया। शुक्रवार को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रतियोगिता के समापन समारोह में अम्बिकापुर के राजमोहिनी भवन में छत्तीसगढ़ आर्म्स फोर्स के पुलिस महानिरीक्षक आरिफ शेख, संयुक्त संचालक शिक्षा श्री हेमन्त उपाध्याय एवं संभागीय सेनानी श्री राजेश पाण्डेय उपस्थित थे। इस दौरान अतिथियों ने जीवन में खेल के महत्व को बताया एवं अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी को बधाई दी। प्रतियोगिता खो-खो, कबड्डी, वॉलीबाल, बैडमिंटन, एथलेटिक्स 100मी. दौड़, रस्सीकूद, गोला फेंक खेल शामिल किए गए थे। जिसमें सातों विकासखंड से आए लगभग 300 से अधिक प्रतिभागियों ने उत्साह, जोश और जज़्बे के साथ हिस्सा लिया।

घूमने निकले शिक्षा विभाग के कर्मचारी का नदी में मिला शव

बिलासपुर। बिलासपुर के मस्तूरी थाना क्षेत्र के तहत इलाके में घर से घूमने निकले शिक्षा विभाग के एक कर्मचारी का नदी में बाइक सहित शव मिलने से हड़कंप मच गया। घटना की सूचना पुलिस को दी गई, घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्मार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच में जुटी है। दरअसल मस्तूरी थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम देवगांव के लीलागर नदी के एनीकट में शुक्रवार की शाम लोगों ने एक लाश देखी जो बाइक के साथ थी। जिसकी सूचना मस्तूरी पुलिस को दी गई, मौके पर पहुँची पुलिस शव को नदी से बाहर निकलवाया और मृतक की पहचान कराई गई, जिसकी पहचान मस्तूरी निवासी अमन मिरी पिता राखी मीरी उम्र 29 वर्ष के रूप में हुई जो शिक्षा विभाग में प्यून था। सूचना पर परिजन भी मौके पर पहुँचे जिन्होंने मृतक की शिनाख्त की, परिजन ने पुलिस को बताया कि अमन आज छुट्टी होने पर घर में ही था जो दोपहर में घूमने निकला था, वह नदी के पास कैसे पहुँचा और क्या घटना हुई कोई नही जानता, लेकिन हत्या की आशंका जताई जा रही है।

जांजगीर चांपा लोकसभा सीट हुई दिलचस्प, शिवकुमार डहरिया दूसरी बार चुनाव मैदान में उतरे

■ **भाजपा ने उतारा नया महिला चेहरा**

जांजगीर चांपा। छत्तीसगढ़ की 11 लोकसभा सीटों में से 6 सीटों पर कांग्रेस ने अपनी पहली सूची जारी कर दी है। जांजगीर चांपा लोकसभा सीट से कांग्रेस ने पूर्व मंत्री शिव कुमार डहरिया को उम्मीदवार घोषित किया है। जबकि भाजपा ने कमलेश जांगड़े को इस सीट पर प्रत्याशी बनाया है। डहरिया के नाम के ऐलान के बाद अब इस सीट पर कांटे की टक्कर नजर आने लगी है।

शिव डहरिया का जन्म साल 1964 में रायपुर जिले के छछानपैरी गांव में हुआ। पिता का नाम आशाराम डहरिया है। पारंपरिक काम खेती किसानी करते हुए उन्होंने बीएएमएस आयुर्वेद चिकित्सा स्नातक की शिक्षा ली। स्कूल शिक्षा से ही सामाजिक गतिविधि और एनसीसी से जुड़े रहे। कांग्रेस की विचारधारा से प्रेरित होकर साल 1989 से राजनीतिक क्षेत्र में काम करना शुरू कर दिया। 1990 में राजीव गाधी के निर्देश पर मध्यप्रदेश में बीजेपी सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए जेल भी गए। अविभाजित मध्य प्रदेश में युवा कांग्रेस के महामंत्री सहित कई पदो में रहे। साल 2000 में राज्य मंत्री का दर्जा मिला। साल 2003 और 2008 में आरंग से विधायक बने। साल 2018 में कांग्रेस से चुनाव लड़कर भूपेश बघेल की सरकार मे नगरीय निकाय मंत्री के पद पर रहे।

भाजपा ने महिला नेता कमलेश जांगड़े को बनाया उम्मीदवार

इस सीट से सांसद गुहाराम अजगल्ले हैं लेकिन भाजपा ने अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित जांजगीर चांपा सीट पर नया और महिला प्रत्याशी उतारा है। बीजेपी ने सक्ति विधानसभा के मसनिया खुर्द की दो बार सरपंच और वर्तमान में सक्ति जिला बीजेपी मोर्चा की अध्यक्ष कमलेश जांगड़े को मैदान में उतारा है। कमलेश जांगड़े का जन्म साल 1977 में हुआ था। ये सक्ती के ही मसानिया गांव की रहने वाली हैं। बात करें शिक्षा की तो हिंदी साहित्य में एमए और डीएड किया है। स्कूल समय से ही कमलेश छात्र राजनीति में ये सक्रिय रहीं।

जांजगीर चांपा लोकसभा सीट का समीकरण

जांजगीर चांपा लोकसभा में 8 विधानसभा आते हैं। जांजगीर चांपा, अकलतरा, सक्ती, चंद्रपुर, जैजैपुर, पामगढ़, बिलाईगढ़, कसडोल विधानसभा। इन सभी विधानसभा में कांग्रेस विधायक है। साल 2023 के छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में भाजपा इस लोकसभा सीट पर खाता भी नहीं खोल पाई। सभी विधानसभा में कांग्रेस विधायक होने के कारण लोकसभा चुनाव में इसका लाभ कांग्रेस को मिल सकता है। इधर भाजपा मोदी की गारंटी के जरिए वोटर्स को लुभाने की कोशिश कर सकती है।

पिछले तीन चुनाव में भाजपा का दबदबा

जांजगीर चांपा लोकसभा सीट पर पिछले तीन बार के हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को ही जीत मिली है। साल 2009 में कांग्रेस से शिवकुमार डहरिया ने चुनाव लड़ा था। भाजपा से कमला देवी पाटले उम्मीदवार थी। इस चुनाव में कमला देवी पाटले को 3 लाख 2 हजार 142 वोट मिले जबकि शिव कुमार डहरिया को 2 लाख 14 हजार 931 वोट मिले। साल 2014 में कांग्रेस ने प्रेम चंद जायसी को चुनाव मैदान में उतारा।

भाजपा ने फिर से कमला देवी पाटले को प्रत्याशी बनाया। कांग्रेस प्रत्याशी प्रेमचंद जायसी को चुनाव में 3 लाख 43 हजार 948 वोट मिले जबकि भाजपा प्रत्याशी कमला देवी पाटले को 5 लाख 18 हजार 909 वोट मिले। इस तरह से 2014 में भी कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा। 2019 लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस ने रवि भारद्वाज और भाजपा से गुहाराम अजगल्ले चुनाव मैदान में रहे। रवि भारद्वाज को 4 लाख 89 हजार 535 वोट मिले और भाजपा प्रत्याशी गुहाराम अजगले को 5 लाख 72 हजार 790 वोट मिले। एक बार फिर कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा। जांजगीर चांपा लोकसभा सीट में लगातार 3 बार भाजपा की जीत हुई। बात करें वोट प्रतिशत की तो तीनों ही बार कांग्रेस के वोट परसेंट में वृद्धि हुई है।

जांजगीर चांपा लोकसभा सीट के चुनावी मुद्दे

बेरोजगारी यहां प्रमुख मुद्दा है। युवा सरकारी नौकरी के लिए भटक रहे हैं। हालांकि किसान और महिलाएं खुश नजर आ रही है। 3100 रुपये प्रति क्विंटल धान खरीदी होने से किसान संतुष्ट दिख रहे हैं। जांजगीर चांपा में किसान वोटर्स ज्यादा है। जिससे किसान वोटों का फायदा भाजपा को हो सकता है। महतारी वंदन योजना का असर भी महिला वोटर्स पर दिख रहा है।

संक्षिप्त समाचार

किसान सम्मेलन को लेकर कांग्रेस के बयान पर कृषि मंत्री नेताम का हमला

रायपुर। किसान सम्मेलन को लेकर कांग्रेस के बयान पर कृषि मंत्री राम विचार नेताम ने हमला बोला है। राम विचार नेताम ने कहा, कांग्रेस की स्थिति खिसयानी बिल्ली खम्बा नोचे वाली है। कांग्रेस के आरोपों में कोई दम नहीं है। किसान कांग्रेस की नीति और नीयत को समझ चुकी है। कांग्रेस के पास कोई मुद्दा नहीं है। आगे उन्होंने कहा, किसान सम्मेलन में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शामिल होने आ रहे हैं। छत्तीसगढ़ के लिए आज ऐतिहासिक दिन है। मोदी जी की गारंटी पूरी होगी। साय सरकार लगातार सभी गारंटी पूरी कर रही है। पूरे देश में छत्तीसगढ़ की पहली सरकार है जो लगातार बड़े-बड़े वादे पूरे कर रही है। वहीं किसान महासम्मेलन पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष किरण देव ने कहा, आज का सम्मलेन ऐतिहासिक है। भाजपा ही है, जो किसानों की हितैषी सरकार है। किसानों की हर मांग भाजपा सरकार पूरी करती रही है।

छत्तीसगढ़ में आर्टिकल 370 मूवी टैक्स फ्री, मुख्यमंत्री साय ने किया एलान

रायपुर। छत्तीसगढ़ में आर्टिकल 370 मूवी को टैक्स फ्री कर दी गई है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने रायपुर स्थित मैग्नेटो माल में आर्टिकल 370 फिल्म देखने पहुंचे थे, इस दौरान उन्होंने ये घोषणा की है। इस मौके पर उनकी धर्मपत्नी कौशल्या देवी साय और मंत्रिमंडल के सहयोगी कृषि मंत्री रामविचार नेताम और वन मंत्री केदार कश्यप समेत विधायकगण भी मौजूद रहे। इस संबंध में चर्चा करते हुए सीएम साय ने कहा कि हमारी विचारधारा एक देश, एक विधान, एक निशान को लेकर है। जम्मू कश्मीर में धारा 370 इस बुनियादी विचारधारा से असंगत थी। हमारे नेताओं ने आजादी के बाद से ही इसका कड़ा विरोध किया। धारा 370 को हटाने का संकल्प हमने लिया था। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह संकल्प पूरा हुआ। आज कश्मीर शांति की ओर बढ़ रहा है। भारत की एकता को लेकर यह बड़ा काम मोदी ने किया। उन्होंने कहा कि मूवी में कश्मीर के हालात को बहुत अच्छी तरह से दिखाया गया है और यह बताया गया है कि किस तरह से आर्टिकल 370 की वजह से कश्मीर विकास की राह में पिछड़ रहा था और इसे खत्म करने के लिए हमारे नेताओं ने कितना कठिन संघर्ष किया। इस मौके पर सांसद सुनील सोनी, विधायक अनुज शर्मा, खुशवंत साहेब और संपत अग्रवाल भी उपस्थित रहे।

अयोध्या से छत्तीसगढ़ लौटा रामलला दर्शन योजना का पहला जत्था

रायपुर। 5 मार्च को रामलला दर्शन योजना के शुभारंभ पर छत्तीसगढ़ से अयोध्या गए श्रद्धालुओं का पहला जत्था शुक्रवार रात रायपुर लौटा। इस दौरान रायपुर रेलवे स्टेशन पर श्रद्धालुओं का ढोल नगाड़ों के साथ जमकर स्वागत किया गया। श्रद्धालु भी अयोध्या से लौटने के बाद काफी खुश नजर आए। पूरा रायपुर स्टेशन जय श्री राम के नारों से गूंज उठा। मंगलवार को सुबह साढ़े 10 बजे सीएम विष्णुदेव साय ने रायपुर रेलवे स्टेशन पर रामलला दर्शन योजना का शुभारंभ किया था। पहले जत्थे में छत्तीसगढ़ के 850 यात्रियों को निशुल्क अयोध्या रामलला के दर्शन करने भेजा गया। इस दौरान सीएम साय ने श्रद्धालुओं का तिलक लगाकर स्वागत किया और उन्हें शुभकामनाएं भी। अयोध्या दर्शन कर आने के बाद सभी श्रद्धालु युवा, बुजुर्ग, महिलाएं काफी उत्साहित दिखी। अयोध्या से वापस लौटी श्रद्धालु दामिनी सिन्हा ने कहा बहुत अच्छी व्यवस्था थी। बहुत अच्छा लगा। रामलला के बहुत अच्छे दर्शन हुए। श्रद्धालु नर्मदा सिन्हा ने कहा हम खुशकिस्मत पीढ़ी है कि हमें रामलला के दर्शन हुए। इसका श्रेय पीएम नरेंद्र मोदी और सीएम साय को जाता है। वारणसी में भी दर्शन किए। श्रद्धालु पूनम चंद सिन्हा ने कहा रामलला के दर्शनकर बहुत अच्छा लग रहा है। अयोध्या में भी बहुत अच्छा स्वागत हुआ। खाने पीने रहने की अच्छी व्यवस्था थी।

बीआरटीएस के टेंडर को प्रदेश यातायात महासंघ ने की रद्द करने की मांग

रायपुर। रायपुर से नवा रायपुर के बीच चलने वाले बीआरटीएस (बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम) के टेंडर को लेकर विवाद शुरू हो गया है। छत्तीसगढ़ यातायात महासंघ ने पक्षपात का आरोप लगाते हुए एनआरडीए से टेंडर रद्द करने की मांग की है। छत्तीसगढ़ यातायात महासंघ का आरोप है कि एक फर्म को टेंडर देने के लिए जानबूझकर ऐसी शर्तें रखी गई थी कि छत्तीसगढ़ का दूसरा कोई बस ऑपरेटर पात्र ही नहीं हो सका। जिस फर्म को टेंडर दिया गया है, वह सिटी बस संचालन में डिफाल्टर हो चुका है। नया रायपुर डेवलपमेंट अथॉरिटी ने इस साल जनवरी में बीआरटीएस के संचालन के लिए टेंडर जारी किया था। टेंडर की कंडिका 3 ।2 में यह शर्त रखी गई थी कि बीआरटीएस चलाने के लिए फर्म को तीन साल सिटी बस संचालन का अनुभव होना चाहिए। यातायात महासंघ का कहना है कि छत्तीसगढ़ में 2014 से सिटी बसों का संचालन हो रहा है, और तब से दुर्गाम्बा ही कई जिलों में सिटी बस चला रही है। इसी को टेंडर देने के लिए ही शर्तों में तीन साल का अनुभव रखा गया था। दुर्गाम्बा ने कोरबा, दुर्ग और बिलासपुर में सिटी बस का संचालन किया।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने पिटे हुए मोहरों पर खेला है दांव, क्लीन स्वीप तय

घोटालेबाज पूर्व मुख्यमंत्री के अलावा तीन हारे हुए मंत्री मैदान में

रायपुर। भाजपा अध्यक्ष किरण सिंहदेव ने कहा है कि इतना लंबा मंथन करने के बाद भी कांग्रेस ने आखिर पिटे हुए मोहरों पर दांव खेला है। छह लोगों की जो सूची जारी की गई है उसमें तीन पूर्व मंत्री हैं जो विधानसभा में अपनी सीट नहीं बचा पाए। लोक सभा चुनाव के लिए लंबी प्रतीक्षा के बाद जारी राज्य मे कांग्रेस के 6 उम्मीदवारों की सूची पर भाजपा अध्यक्ष किरण सिंहदेव ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में तीन महीने पहले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को प्रदेश की जनता पूरी तरह नकार चुकी है। घोटालों से त्रस्?त जनता ने जिन लोगों को बाहर का रास्?ता दिखाया, कांग्रेस पार्टी ने फिर से उन?हीं लोगों पर लोकसभा चुनाव में भरोसा जताकर बड़ी भूल की है। भूपेश बघेल सरकार पर शराब घोटाला, ट्रांसफर घोटाला, गोबर घोटाला, ग्राम सभा सदस्य बनाने के नाम पर घोटाला, चावल घोटाला, खदान से जुड़े माल ढुलाई

के काम में घोटाला के साथ ही महादेव बेटिंग ऐप जैसे घोटालों की लंबी फेहरिस्त है। यही वजह है कि वे खुद भी लगातार चुनाव नहीं लड़ने की इच?छा मीडिया के सामने जताते रहे। जांजगीर-चांपा लोकसभा सीट के उम?मीदावार शिव डहरिया हारने के बाद अपने बंगले में सरकारी खर्चे पर खरीदे गए लाखों के सामान साथ ले गए। वहीं उनकी परिजन के नाम पर सामुदायिक भवन कब?जा करने का मामला सामने आ चुका है। महासमुंद प्रत?याशी तामंध?वज साहू पिछली कांग्रेस सरकार में गृहमंत्री रहे वे अपनी सीट नहीं बचा पाए। इस दौरान उनके लोक? निर्माण विभाग में बड़े बडे घोटाले उजागर हुए और नतीजा यह हुआ कि वे हार गए। भाजपा के उम्मीदवार अधिक लोकप्रिय और प्रभावी है। पहली सूची से साफ हो रहा की लोकसभा मे कांग्रेस मुंह की खायेगी। प्रदेश की जनता ने मोदी की गारंटी पर भरोसा करके चुनाव जिताया है। लोकसभा चुनाव मे भी जनता मोदी के 10 सालो के सुशासन पर मुहर लगाएगी।

कांग्रेस के प्रत्याशियों की पहली सूची आने के बाद फिर दिग्गजों ने कांग्रेस छोड़ी

ये माना कांग्रेस की हार तय है

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव ने कहा कि छत्तीसगढ़ कांग्रेस में अब चला चली की बेला है। पतझड़ की तरह कांग्रेस रूपी वृक्ष को उनके नेता और कार्यकर्ता लगातार छोड़ रहे है। वैसे तो पूरे देश में यही आलम है। केंद्रीय राजनीति में भी कई दिग्गज नेता कांग्रेस छोड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस के नेता एक - एक कर पार्टी को छोड़ते जा रहे हैं। शनिवार को साइंस कॉलेज मैदान रायपुर में आयोजित भाजपा किसान मोर्चा के महाकुंभ के दौरान पूर्व विधायक एवं प्रदेश उपाध्यक्ष कांग्रेस कमेटी चुन्नीलाल साहू, डॉ. चौलेश्वर चंद्राकर पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा कांग्रेस, क्रालिन्स प्रदेश महामंत्री अल्पसंख्यक जोगी कांग्रेस,

कांग्रेस के पूर्व विधायक सहित कई दलों के नेताओं ने भाजपा प्रवेश किया

भाजपा का प्रवेश कार्यक्रम जारी

पिछले एक महीने में तीसरी बार फिर कई दिग्गज भाजपा में शामिल

ब्रिगेडियर आशीष कुमार दास, अजय बंसल प्रदेश अध्यक्ष सहकारिता प्रकोष्ठ कांग्रेस पूर्व संचालक अपेक्स बैंक छत्तीसगढ़, सुरेश यादव पीसीसी प्रतिनिधि, प्रदेश उपाध्यक्ष पिछड़ा वर्ग कांग्रेस कमेटी, ए. दास साहू प्रदेश प्रवक्ता पिछड़ा वर्ग कांग्रेस कमेटी, सुमित राज साहू प्रतिनिधि जिला सचिव ऑल इंडिया प्रोफेशनल कांग्रेस, रामस्नेही जांगड़े प्रदेश उपाध्यक्ष अनुसूचित जाति विभाग प्रदेश कांग्रेस कमेटी, बृजमोहन साहू प्रदेश महामंत्री पिछड़ा वर्ग विभाग कांग्रेस कमेटी, लोरमी से सोहन डड़सेना पार्षद, हरिशंकर जायसवाल पूर्व पार्षद, अशोक शर्मा पूर्व पार्षद, रज्जू भारती वरिष्ठ कांग्रेस नेता सामाजिक कार्यकर्ता, सहित बड़ी संख्या में विभिन्न लोगों ने भाजपा की सदस्यता ली।

भूपेश को राजनांदगांव से टिकट मिलने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कहा जीतेंगे हम

राजनांदगांव। पूर्व सीएम भूपेश बघेल को राजनांदगांव से प्रत्याशी बनाने का स्वागत कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने किया है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पूरे शहर में रैली निकालकर आतिशबाजी की। इस दौरान मिठाईयां बांटकर पूर्व सीएम भूपेश बघेल के समर्थन में नारे भी लगाए। इस दौरान शहर की महापौर हेमा देशमुख ने कहा कि पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने पूरे छत्तीसगढ़ का विकास किया है। राजनांदगांव शहर का विकास करने में भूपेश बघेल का बड़ा योगदान है ।राजनांदगांव अकेला जिला था। लेकिन कांग्रेस की सरकार ने दो नए जिलों का गठन करके विकास करवाया है।

इस दौरान महापौर हेमा देशमुख ने मौजूदा सांसद संतोष पाण्डेय पर हमला भी बोला ।हेमा देशमुख ने कहा कि संतोष पाण्डेय ने राजनांदगांव के विकास के लिए कोई काम नहीं किया है। मौजूदा सांसद की कार्यशैली सही नहीं है ।जिसका जवाब अबकी बार जनता देगी। सांसद की कार्यशैली से जनता नाराज थी ।लेकिन अब जब पूर्व सीएम के नाम का ऐलान हुआ है तो सभी में खुशी का माहौल है। वहीं कांग्रेस कार्यकर्ताओं में जोश और जुनून है। सभी साथ मिलकर पूर्व मुख्यमंत्री को जिताएंगे। आपको बता दें कि भूपेश बघेल का नाम सामने आने के बाद बाहरी उम्मीदवार होने की बात भी सामने आ रही है ।इसके जवाब में हेमा देशमुख ने कहा कि बीजेपी ने भी सरोज पाण्डेय को कोरबा से टिकट दिया है ।क्या वो बाहरी नहीं है। लेकिन भूपेश बघेल पूरे छत्तीसगढ़ के सीएम रह चुके हैं ।पूरे छत्तीसगढ़ का विकास किया है ।एक

मुख्यमंत्री के लिए कोई बाहरी नहीं होता। पूर्व मुख्यमंत्री ने पूरा काम किया है। आपको बता दें कि इस बार राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र ने कांग्रेस ने बड़ा दावा खेलते हुए पूर्व सीएम भूपेश बघेल को प्रत्याशी बनाया है। भूपेश बघेल के प्रत्याशी घोषित होने पर कांग्रेस कार्यकर्ता और पदाधिकारी काफी खुश हैं। इस दौरान शहर में कांग्रेस की जीत का नारा लगाया गया है। वहीं दुर्ग लोकसभा क्षेत्र से बीजेपी के विजय बघेल के सामने कांग्रेस ने राजेंद्र साहू को उतारा है ।इस सीट पर पहले ताम्रध्वज साहू को उतारने की चर्चा थी ।लेकिन आखिर में राजेंद्र साहू का चुनाव हुआ। राजेंद्र साहू जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक मर्यादित के पूर्व अध्यक्ष और युवा नेता के तौर पर जाने जाते हैं। राजेन्द्र साहू वर्तमान में कांग्रेस पार्टी में महामंत्री हैं। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण मंच से राजेंद्र साहू ने अपनी राजनीति की शुरुआत की थी। इसके बाद कांग्रेस में शामिल हुआ।

पूर्व विधायक चुन्नीलाल साहू ने छोड़ी कांग्रेस, भाजपा में हुए शामिल

- **पीसीसी चीफ दीपक बैज को भेजा इस्तीफा, लोकसभा चुनाव में टिकट वितरण से थी नाराजगी**

रायपुर। पूर्व विधायक चुन्नी लाल साहू और कांग्रेस ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष चोलेश्वर चंद्राकर कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा देने के चंद घंटे के भीतर भाजपा में शामिल हो गए। किसान सम्मेलन के दौरान दोनों नेताओं के साथ बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव और विधायक अजय चंद्राकर ने भाजपा का स्कार्फ पहनाकर पार्टी में शामिल किया।

लोकसभा चुनाव 2024 के लिए कांग्रेस की पहली सूची जारी हुई है। इस सूची में छत्तीसगढ़ के 6 लोकसभा सीट में प्रत्याशियों का ऐलान किया गया है। सीटों में नाम के ऐलान के बाद अब कांग्रेस में टूट नजर आने लगी है। जांजगीर चांपा जिले की अकलतरा सीट के पूर्व विधायक चुन्नीलाल साहू ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया है। चुन्नीलाल साहू ने पीसीसी चीफ दीपक बैज को अपना इस्तीफा सौंपा है। चुन्नीलाल साहू ने इस्तीफा देने के बाद कांग्रेस नेताओं पर पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ताओं की उपेक्षा करने का आरोप लगाया। इस्तीफे के बाद चुन्नीलाल साहू ने कहा कि कांग्रेस में निष्ठावान कार्यकर्ताओं का

सम्मान नहीं हो रहा है। काम करने वाले लोगों का का मूल्यांकन नहीं होता ।पार्टी के नेता हारे हुए जनप्रतिनिधियों पर भरोसा जताते हैं। जो लोग चुनाव में हार चुके हैं,उन्हें फिर से मौका दिया जा रहा है ।यदि कांग्रेस संगठन में इसी तरह से चलता रहेगा,तो फिर ऐसी जगह पर रहने का कोई फायदा नहीं।

चुन्नीलाल साहू ने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता भी छोड़ दी है। आपको बता दें कि चुन्नीलाल साहू विधानसभा चुनाव के समय से नाराज चल रहे थे। कांग्रेस ने इस बार विधानसभा चुनाव में उन्हें अकलतरा से टिकट नहीं दिया था ।चुन्नीलाल का दावा था कि यदि पार्टी उन्हें टिकट देती तो वो चुनाव जरुर जीतते ।लेकिन कांग्रेस ने चुन्नीलाल के बजाए राघवेंद्र सिंह पर भरोसा जताया ।राघवेंद्र सिंह ने भी पार्टी का भरोसा कायम रखते हुए अकलतरा सीट जीती ।लेकिन चुन्नीलाल का कहना था कि ये उनकी और कार्यकर्ताओं के मेहनत का परिणाम था ।इसके बाद चुन्नीलाल को उम्मीद थी कि उन्हें लोकसभा प्रत्याशी बनाया जाएगा ।लेकिन ऐसा हो ना सका ।इसलिए चुन्नीलाल ने पार्टी छोड़ दी।

पोषण पखवाड़ा शुरू, पोषण जागरुकता के लिए आयोजित होंगी कई गतिविधियां

रायपुर। छत्तीसगढ़ में आज से पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम शुरू किया गया है। कुपोषण और एनीमिया के स्तर में कमी लाने के उद्देश्य से 9 मार्च से 23 मार्च तक पोषण पखवाड़ा आयोजित की जाएगी। इस दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से जन समुदाय तक स्वास्थ्य,पोषण और स्वच्छता संबंधी जानकारी का प्रचार कर व्यवहार परिवर्तन का प्रयास किया जाएगा।

पोषण पखवाड़ा के तहत इस साल मुख्यत: तीन थीम पर आधारित गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। इनमें पोषण भी पढ़ाई भी थीम के तहत आंगनबाड़ी केन्द्र में शिक्षा चौपाल का आयोजन और विशेष रूप से ईसीसीई लर्निंग कॉर्नर को बढ़ावा दिया जाएगा। दूसरी थीम के तहत जनजाति, पारंपरिक, क्षेत्रीय और स्थानीय आहार प्रथाओं पर पोषण के प्रति संवेदनशीलता पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा। तीसरी थीम गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य और शिशु एवं छोटे बच्चे के आहार संबंधी व्यवहार पर केन्द्रित है। पोषण पखवाड़ा को स्वास्थ्य, पंचायत, शिक्षा जैसे कई विभागों

के सहयोग से परिणाम मूलक बनाया जाएगा। प्रमुख पंचायतों एवं हाट-बाजारों में महिलाओं एवं बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य एवं देखभाल संबंधी उचित आदतों के विकास और सुधार के संबंध में प्रदर्शन करते हुए लोगों को जागरूक किया जाएगा। इस दौरान की जाने वाली सभी गतिविधियों को जन आंदोलन के डेश बोर्ड पोर्टल पर प्रतिदिन एन्ट्री भी किया जाएगा।

देशभर में वर्ष 2018 से पोषण अभियान का संचालन किया जा रहा है। व्यक्तिगत एवं समुदाय स्तर पर स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधित व्यवहार परिवर्तन पोषण अभियान का एक प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर साल मार्च एवं अप्रैल माह में पोषण पखवाड़े का आयोजन किया जाता है।

शाही स्नान के साथ राजिम कुंभ का समापन

देशभर के साधू संतों ने त्रिवेणी संगम में लगाई आस्था की डुबकी

रायपुर। राजिम के त्रिवेणी संगम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने की। राजिम कुंभ के दौरान संगम नगरी राजिम कुंभ कल्प में अयोध्या धाम का आकर्षक वैभव दिखा। इस वर्ष का राजिम कुंभ कल्प रामोत्सव के रूप में मनाया गया। कुंभ में देशभर से साधु-संत और महामंडलेश्वर भी शामिल हुए। राज्यपाल हरिचंदन और मौजूद अतिथियों ने भगवान राजीव लोचन की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर आशीर्वाद लिया। इसके साथ ही प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की।

समापन समारोह में राज्यपाल हरिचंदन ने कहा कि छत्तीसगढ़ की पवित्र नगरी राजिम के कुंभ मेले में शामिल होकर मुझे आत्मिक प्रसन्नता हो रही है। राजिम मेले में पधारे समस्त संतों, विद्वानों और धर्मगुरूओं को मैं प्रणाम करता हूं। यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि देश के प्रतिष्ठित आचार्यों, साधु, संतों, महामंडलेश्वर, महात्माओं का आगमन राजिम

में हुआ है। प्रदेश के हृदय स्थल में महानदी, पैरी और सोंढूर नदियों के त्रिवेणी संगम पर स्थित राजिम नगरी, छत्तीसगढ़ के प्रयागराज के रूप में प्रतिष्ठित प्रमुख तीर्थ स्थल है। मुख्यमंच में राज्यपाल को 'राजिम कुंभ कल्प लोक आस्था का विराट संगम' पुस्तिका भेंट की गई।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि पांच साल बाद फिर से भारतवर्ष के वासी इस भव्य आयोजन के साक्षी बने हैं। सभी प्रतीक्षा में थे कि राजिम कुंभ का एक बार फिर से आयोजन होना चाहिए। उन्होंने इस भव्य कुंभ के आयोजन के लिए मंत्री बृजमोहन अग्रवाल का आभार जताया। उन्होंने कहा कि आज माता शक्ति स्वरूपा का दिन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और भगवान शिव का दिवस महाशिवरात्रि है। यह ब्रम्हांड के सृजन का दिन है। उन्होंने सभी को राजिम कुंभ कल्प की बधाई देते हुए कहा कि राजिम कुंभ में पहुंच के कृतार्थ हुए।

समापन समारोह में मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि पांच साल बाद फिर से राजिम कुंभ का भव्य आयोजन हुआ। यह सब साधु संतो के आशीर्वाद से ही संपन्न हुआ। छत्तीसगढ़ माता कौशल्या की जन्मभूमि है, प्रभु श्रीराम का वन गमन मार्ग है यह पूरे देश और विश्व को पता लगे इसी उद्देश्य से राजिम कुंभ कल्प का आयोजन किया जा रहा है। मंत्री अग्रवाल ने कहा कि राजिम कुंभ में इस साल 20 लाख से अधिक श्रद्धालुगण शामिल हुए।

ईडी और आईटी के माध्यम से विपक्ष को धमका रही भाजपा: दीपक बैज

- **पीसीसी चीफ का केन्द्र सरकार पर प्रहार, कहा- जो बीजेपी में शामिल होगा वो वॉशिंग मशीन में धुल जाएगा**

रायपुर। रायपुर में शनिवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज ने प्रेसवार्ता की। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष ने केंद्र में कांग्रेस की सरकार बनने पर 30 लाख नौकरियां निकाले जाने की बात कही। इसके साथ ही पीसीसी अध्यक्ष ने केंद्र की भाजपा सरकार पर जमकर प्रहार किया। पीसीसी अध्यक्ष ने कहा कि आईटी और ईडी को माध्यम बनाकर जिस तरह से बीजेपी छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में जीत हासिल की थी, लोकसभा चुनाव में भी बीजेपी की वैसी ही तैयारी है। केन्द्र सरकार ईडी और आईटी के माध्यम से कांग्रेस ही नहीं बल्कि अन्य विपक्षी पार्टियों को भी डरा धमका रही है।

प्रेस वार्ता के दौरान छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि, केंद्र सरकार ईडी और आईटी को माध्यम बनाकर कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियों को डराने धमकाने का काम कर रही है। चिंतामणि पर एफआईआर दर्ज किया जाता है। जब वो बीजेपी ज्वाइन कर लेते हैं तो एफआईआर गायब हो जता है। जो भी बीजेपी में शामिल हो जाएगा, वह वाशिंग मशीन से धुल जाएगा।

पीसीसी चीफ ने कहा कि, कांग्रेस पार्टी ने चुनाव के समय कई वादे किए थे, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जुमलेबाजी देश की जनता को गुमराह करने में सफल रही। साल 2019 के चुनाव और अब की चुनाव में काफी अंतर है। केंद्र की सरकार ने सेना की भर्ती भी सीमित कर दी है। देश के यूपी, बिहार जैसे राज्यों के युवा सड़कों पर हैं। केंद्र की सरकार ने हर साल 2 करोड़ नौकरी देने का वादा किया था, लेकिन यह नौकरी भी

किसी को नहीं मिली। आज देश के शिक्षित बेरोजगारों को नौकरी और रोजगार की जरूरत है। केंद्र सरकार के कई दफ्तर में विभिन्न पद खाली पड़े हुए हैं, सरकार की ओर से इन पदों पर भर्ती नहीं निकाली जा रही है।

दीपक बैज ने कहा कि, इस दौरान दीपक बैज ने लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी बनाए जाने पर कहा कि लोकसभा चुनाव में छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की ओर से 6 प्रत्याशियों की घोषणा कर दी गई है। आने वाले दिनों में पांच प्रत्याशियों की घोषणा कर दी जाएगी। जो भी पार्टी के आलाकमान तय करेगें, उसका पालन किया जाएगा। केंद्र में अगर कांग्रेस की सरकार बनती है तो 30 लाख नौकरी निकाली जाएगी, जिसमें केंद्रीय मंत्रालय, स्वास्थ्य, शिक्षा, पुलिस और सेना के साथ ही नई भर्ती प्रक्रिया भी निकाली जाएगी। इसके साथ ही 25 साल से कम आयु के सभी डिप्लोमा धारी या कॉलेज स्नातक को निजी या सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी में 1 साल प्रशिक्षण प्रदान के बाद कांग्रेस एक प्रशिक्षित अधिकार अधिनियम की गारंटी देता है। प्रशिक्षित युवाओं को 1 लाख रुपये प्रतिवर्ष मिलेंगे। कांग्रेस प्रशिक्षित को मांग संचालित अधिकार बनाने वाले पहले हैं। प्रत्येक योग्य व्यक्ति, जो नौकरी चाहता है उसे नौकरी दी जाएगी। साल 1961 के प्रशिक्षित अधिनियम में यह पहले से ही आवश्यक है। हम उसे विचार को आगे बढ़ा रहे हैं। 50 लाख प्रशिक्षित युवाओं का लक्ष्य रख रहे हैं।

पीसीसी चीफ ने कहा कि, वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षण संवर्धन योजना के तहत 8 लाख प्रशिक्षित हैं। यह महत्वाकांक्षी अधिनियम हमारे युवाओं के लिए कौशल रोजगार योग्यता और सर्वोपरि सम्मान प्रदान करेगा। सार्वजनिक परीक्षाओं के संचालन में ईमानदारी और निष्पक्षता के उच्चतम मानकों का सुनिश्चित करने के लिए नए कानून की गारंटी देगी, जो पेपर लीक को करोड़ों युवाओं के भविष्य को अंधकार में जाने से रोकेंगे। युवा रोशनी योजना अंतर्गत कांग्रेस 5000 करोड़ का कोष भी बनाए जाएंगे, जिसका आवंटन देश के सभी जिलों में 5 साल की अवधि के लिए होगा। 40 वर्ष से कम आयु के युवा किसी भी क्षेत्र में अपने व्यावसायिक उद्योगों के लिए स्टार्टअप फंडिंग का लाभ उठा सकते हैं। सरकार की मौजूदा योजनाएं जैसे 10000 करोड रुपए की फंड ऑफ फंड्स स्कीम से केवल विशिष्ट निवेशक और शीर्ष संस्थाओं को लाभ पहुंचाती है।

दुर्गम इलाकों तक पहुंच आसान करेगा अरुणाचल का सेला टनल

प्रभाकर मणि तिवारी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नौ मार्च को अरुणाचल प्रदेश में सामरिक रूप से बेहद अहम सेला टनल का उद्घाटन कर दिया। चीनी सीमा से लगा तवांग इलाका खासकर सर्दी के दिनों में भारी बर्फबारी के कारण देश के बाकी हिस्सों से कट जाता है। लेकिन अब इस टनल के जरिए वह बारहों महीने जुड़ा रहेगा। इससे न सिर्फ सेना और सैन्य उपकरणों को आपात स्थिति में मौर्चे पर भेजा जा सकेगा, बल्कि आम लोगों का जीवन आसान हो जाएगा और इलाके में पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। पहले राजधानी ईटानगर या असम के तेजपुर से तवांग इलाके तक पहुंचने के लिए करीब 14 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित सेला दर्रे से होकर गुजरना पड़ता था। लेकिन यह सड़क साल में करीब तीन महीने बंद रहती थी। इसके अलावा बरसात के सीजन में भी अक्सर जमीन धंसने के कारण इस पर आवाजाही ठप हो जाती है। चीन शुरू से ही भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश को दक्षिण तिब्बत का हिस्सा मानते हुए इस पर अपना दावा करता रहा है। हाल के वर्षों में उसने सीमावर्ती इलाको में अपनी गतिविधियां काफी बढ़ा दी हैं। इसके तहत इलाके में नए गांव बसाना और आधारभूत सुविधाएं विकसित करना शामिल है। इन गतिविधियों से चिंतित केंद्र सरकार ने भी अब बड़े पैमाने पर इससे निपटने की कवायद शुरू कर दी है। इसके तहत सीमा से सटे इलाकों में बसे दुर्गम गांवों तक सड़कों का जाल बिछाना, मॉडल गांव विकसित करना और इलाके में बड़े पैमाने पर विकास परियोजनाएं शुरू करना शामिल है। सेला टनल का निर्माण इसी कवायद का सबसे अहम हिस्सा है। सेला टनल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसके भीतर से गुजरने की स्थिति में चीन वहां ट्रैफिक की आवाजाही की निगरानी नहीं कर सकेगा। राज्य की 1,080 किमी लंबी सीमा चीन से लगी है। इसके अलावा 520 किमी लंबी सीमा म्यांमार और 217 किमी लंबी सीमा भूटान से भी लगी है। वर्ष 1962 के युद्ध के दौरान चीनी सेना इसी इलाके से भारत में घुस कर असम के तेजपुर शहर के करीब पहुंच गई थी। एक सरकारी अधिकारी आंकड़ों के हवाले बताते हैं- केंद्र सरकार इलाके में आधारभूत सुविधाओं के विकास के प्रति बेहद गंभीर है। बीते साल सितंबर में करीब 2900 करोड़ की परियोजनाओं के उद्घाटन से पहले वर्ष 2022 में भी 2900 करोड़ लागत वाली 103 परियोजनाओं का उद्घाटन किया गया था। एक अन्य अहम परियोजना के तहत विशाल ब्रह्मपुत्र नदी के नीचे 15.6 किलोमीटर लंबी जुड़वां सुरंगों का निर्माण किया जाना है। इससे असम और अरुणाचल प्रदेश के बीच यात्रा में लगने वाला समय काफी कम हो जाएगा। सरकार ने सीमावर्ती इलाकों में कनेक्टिविटी बेहतर बनाने के लिए 40 हजार करोड़ की लागत वाली दो हजार किमी लंबी फ्रंटियर हाइवे के निर्माण की भी योजना बनाई है। यह सड़क अरुणाचल में मांगों से शुरू होकर राज्य के सीमावर्ती इलाकों से गुजरते हुए म्यांमार सीमा से सटे विजयनगर तक जाएगी। सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) के एक अधिकारी बताते हैं कि यह भारत की अब तक की सबसे बड़ी और कठिन सड़क परियोजना है। यह मैकमोहन लाइन को कवर करते हुए नियंत्रण रेखा से करीब 25 किमी भीतर बनेगी। फिलहाल तेजपुर या ईटानगर से तवांग को जोड़ने वाली सड़क सेला पास से होकर गुजरती है। अरुणाचल की राजधानी ईटानगर से तवांग के बीच की 447 किमी दूरी तय करने में फिलहाल करीब 14 घंटे का समय लगता है। इसी तरह तेजपुर से तवांग के बीच की 327 किमी दूरी तय करने में नौ घंटे से ज्यादा का समय लग जाता है। यह दुनिया में दोहरी सड़क वाली सबसे लंबी टनल है। इस परियोजना के तहत कुल तीन टनल बनाए गए हैं। पहला टनल 993 मीटर लंबा है। दूसरा टनल जुड़वां हैं। इसमें मुख्य टनल 1591 मीटर लंबी है और उससे सटी एक और एस्केप टनल भी बनाई गई है जो आपात स्थिति में राहत और बचाव के काम आ सके। इस परियोजना से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि इस दुर्गम इलाके में ऐसी टनल का निर्माण काफी चुनौती भरा था। मौसम भी बेहद प्रतिकूल था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फरवरी 2019 में इसकी आधारशिला रखी थी।

कांग्रेस के डूबते जहाज में भगदड़

योगेंद्र योगी

भाजपा के बढ़ते प्रभाव और कांग्रेस की कमजोर पड़ती सत्ता से कांग्रेसियों में भगदड़ मची हुई है। दरअसल कांग्रेस के डूबते राजनीतिक जहाज में सवार नेताओं को अपना भविष्य डूबने का खतरा सता रहा है। यही वजह है कि कांग्रेस की हालत आयाराम-गयाराम जैसी हो गई है। लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस छोडने वाले नेताओं की लंबी फेहरिस्त सामने आ चुकी है। यह सिलसिला लोकसभा चुनाव तक जारी रहने की उम्मीद है। कांग्रेस में बदहवासी का आलम यह है कि हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस की सरकार गिरते-गिरते बची है। राज्यसभा के निर्वाचन में हुई क्रास वोटिंग का सर्वाधिक खामियाजा कांग्रेस ने भुगता है। क्रास वोटिंग करने वाले नेताओं को इस बात का अंदाजा लग गया कि इस राजनीतिक पार्टी में भविष्य सुरक्षित नहीं है। यही वजह रही कि बहती गंगा में हाथ धोने से कांग्रेस के नेता बाज नहीं आए।

आश्चर्य की बात यह है कि एक तरफ कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी पहले देश में एकता यात्रा और उसके बाद अब न्याय यात्रा निकाल रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ राहुल गांधी और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता कांग्रेस में व्याप्त हताशा को रोकने के लिए कोई मजबूत उपाय नहीं कर सके। पार्टी से एक के बाद एक वरिष्ठ नेता कांग्रेस का दामन छोडने में लगे हुए हैं। कांग्रेस की बात करें तो पांच बड़े नेताओं ने पिछले एक महीने के अंदर पार्टी छोड़ी है। कमलनाथ इस सूची में छठा नाम हो सकते हैं। चुनाव की तारीख का ऐलान होने में एक महीने से भी कम समय बचा है। ऐसे में कांग्रेस के लिए नई रणनीति बनाना और जीत हासिल करना बेहद मुश्किल होगा। बड़े नेताओं के दल बदलने से सबसे ज्यादा नुकसान कांग्रेस को हुआ है, लेकिन बीजेपी भी इससे नहीं बच पाई है। सत्ताधारी पार्टी के तीन बड़े नेता पाला बदल चुके हैं। खास बात यह है कि तीनों नेता कांग्रेस में शामिल हुए हैं। इसके अलावा आम आदमी पार्टी के अशोक तंवर भी बीजपी का हिस्सा बन चुके हैं। हालांकि, बीजेपी का साथ छोड़कर कांग्रेस में जाने वाले आखिरी बड़े नेता जी विवेक थे, जिन्होंने नवंबर 2023 में ऐसा किया था। इसके बाद से पार्टी अपने नेताओं को बांधकर रखने में सफल रही है।

मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ पार्टी के हाई कमान से नाराज हैं और बीजेपी में शामिल हो सकते हैं। अगर कमलनाथ कांग्रेस छोड़ते हैं तो वह ऐसा करने वाले कांग्रेस के पहले पूर्व मुख्यमंत्री नहीं होंगे। उनसे पहले 12 नेता ऐसा कर चुके हैं। खास बात यह है कि कमल नाथ की वजह से कांग्रेस छोडने वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया पहले ही बीजेपी का हिस्सा हैं। कुछ नेताओं ने अपनी पार्टी बनाई तो वहीं कुछ नेता दूसरी पार्टी में शामिल हो गए। इस सूची में सबसे ज्यादा तीन पूर्व मुख्यमंत्री गोवा के हैं। गोवा के दिगंबर कामत, रवि नाइक और लुइजिन्हो फलेरियो ऐसे नेता हैं, जो कांग्रेस सरकार में मुख्यमंत्री रहे, लेकिन बाद में पार्टी छोड़ दी। इनमें से दिगंबर और रवि ने तो अंत में बीजेपी का दामन थामा, लेकिन फलेरियो पहले टीएमसी में रहे फिर इस पार्टी से भी अलग हो गए। अगले कुछ महीनों में लोकसभा के चुनाव हैं। इससे ठीक पहले जिस तरह कांग्रेस से दिग्गज नेता अलग हो रहे वो चौंकाने वाला है। कांग्रेस को झटके पर झटका उनकी पार्टी के नेता ही दे रहे हैं। चुनाव से ठीक पहले ही कांग्रेस के नेता पार्टी को छोडना शुरू कर देते हैं। कांग्रेस के कई पूर्व सीएम जैसे कि कैप्टन अमरिंदर सिंह, गुलाम नबी आजाद, एन. बिरेन सिंह, नारायण राणे, एसएम कृष्णा, शंकर सिंह वाघेला, पेमा खांडू और अशोक चव्हाण जैसे नेताओं का भी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से भरोसा समाप्त होता नजर आया। कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता एक तरफ तो पार्टी छोड़ चुके हैं। वहीं, दूसरी तरफ कई बड़े नेताओं के पार्टी छोडने की अटकलें लगाई जा रही हैं। महाराष्ट्र में तो कांग्रेस को एक के बाद एक प्रदेश के तीन दिग्गज नेताओं ने झटका दिया है। सबसे पहले पार्टी से एक महीने पहले मिलिंद देवड़ा ने इस्तीफा दिया। इसके बाद 8 फरवरी को बाबा सिद्दीकी ने पार्टी छोडने का ऐलान कर दिया और अब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण भी कांग्रेस की नाव से उतर चुके हैं। कांग्रेस के अंदर की अंतर्कलह आज से जारी नहीं है।

राहुल गांधी के सबसे नजदीकी नेताओं में शामिल रहे दिग्गज भी अब बीजेपी के साथ हैं तो वहीं कांग्रेस में सोनिया गांधी के करीबी माने जाने वाले नेताओं में से रीता बहुगुणा जोशी, कैप्टन अमरिंदर सिंह और गुलाम नबी आजाद भी पार्टी का दामन छोड़ चुके हैं। कांग्रेस से युवा नेताओं का भी मोह भंग होता जा रहा है। इसका उदाहरण मिलिंद देवड़ा, ज्योतिरादित्य सिंधिया, जितिन प्रसाद, अल्पेश ठाकोर, हार्दिक पटेल, सुष्मिता देव, प्रियंका चतुर्वेदी, आरपीएन सिंह, अशोक तंवर जैसे नेता हैं, जो कांग्रेस से अलग हो चुके हैं। बिहार में अशोक चौधरी, असम के वर्तमान मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा शर्मा, सुनील जाखड़ के साथ अश्वनी कुमार जैसे भी नेता हैं जो पार्टी के काम करने के तरीके से नाखुश होकर पार्टी का दामन छोड़ चुके हैं। कांग्रेस ने पूरे देश में विपक्ष को एनडीए के खिलाफ इकठ्ठा करने के लिए इंडिया गठबंधन तैयार किया, तब उसे लगा था कि देश की सत्ता तक पहुंचने के लिए यह रास्ता आसान होगा। लेकिन, एक-एक कर इंडिया गठबंधन से पार्टियां अलग होती चली गईं। सबसे पहले नीतीश कुमार जिन्होंने इस गठबंधन के लिए सबको इकठ्ठा किया था बीजेपी के साथ हो लिए। फिर ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल को भी कांग्रेस का साथ रास नहीं आ रहा। ममता कांग्रेस पर निशाना साध रही हैं तो अरविंद केजरीवाल जिस तरह से लोकसभा सीटों पर उम्मीदवार उतारने का दावा कर रहे हैं उससे साफ हो गया है कि वह एकला चलो रे की राह पर बढ़ रहे हैं। एनसीपी और शिवसेना टूटी और उनका नेतृत्व जिनके हाथ में है, वह कांग्रेस का विरोध करते रहे हैं।

कांग्रेस के 10 साल के समय को देखें तो पता चल जाएगा कि एक तरफ पार्टी के शीर्ष नेतृत्व की तरफ से पार्टी की जमीन देश में मजबूत करने की कोशिश हो रही है, दूसरी तरफ पार्टी के दिग्गज और युवा नेताओं ने एक-एक कर पार्टी का साथ छोड़ दिया है। कांग्रेस को छोड़ते समय इनमें से ज्यादातर नेताओं ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व और खासकर राहुल गांधी पर उनकी अनदेखी के आरोप लगाए। इनमें से जिन्होंने भी बीजेपी का दामन थामा, उन्हें पार्टी ने जगह भी दी। कांग्रेस ने आचार्य प्रमोद कृष्णम को बाहर का रास्ता दिखाया तो अब उनके भी बीजेपी में शामिल होने की बात कही जा रही है। पार्टी के नेताओं के असंतोष पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि बड़े-छोटे देशभर के हर प्रदेश से कुल मिलाकर 400 से ज्यादा की संख्या में अलग-अलग स्तर के नेता कांग्रेस का दामन छोड़ चुके हैं। जर्जर होती कांग्रेस की इसी हालत का फायदा इंडिया गठबंधन के क्षेत्रीय दलों ने उठाया है। क्षेत्रीय दल कांग्रेस के साथ लोकसभा की सीटों के मोलभाव अपनी सुविधा के हिसाब से कर रहे रहे हैं। लाचार कांग्रेस के पास क्षेत्रीय दलों की शर्तें मानने के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं बचा है। यही वजह है कि कांग्रेस ने पंजाब, दिल्ली और उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में मजबूरी में समझौते किए हैं। यह बात दीगर है कि कभी इन राज्यों में कांग्रेस के दुदंभी बजती थी।

दरअसल भाजपा के ताकतवर होने होने के बाद कांग्रेस ने कभी भी पार्टी के लगातार कमजोर पड़ते जाने को लेकर आत्मंथन नहीं किया। कांग्रेस अपनी किसी भी नीति और सिद्धांत पर कायम नहीं रह सकी। ऐसे में भाजपा ने कांग्रेस के ढहते किले में तोडफ़ोड़ करने में कसर बाकी नहीं रखी। भाजपा ने दोतरफ से कांग्रेस का घेराव किया। एक तरफ कांग्रेस शासन के भ्रष्टाचार और गलत नीतियों को न सिर्फ उजागर किया बल्कि कई दिग्गजों पर सीबीआई और ईडी की कार्रवाई भी करवाई। दूसरी तरफ भाजपा ने कांग्रेस में सेंधमारी करके उसे हाशिए पर लाने में कसर बाकी नहीं रखी। दोनों तरफ से पिटती कांग्रेस में नेताओं को लगने लगा कि इसके दिन लद गए लगते हैं। कांग्रेस छोडने वाले नेताओं बेशक भाजपा में अपना भविष्य बेहतर लग रहा हो, किन्तु भाजपा के अनुशासन केंद्रीकृत नीतियों के चलते कांग्रेस जैसी मौज नहीं मिल सकती।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-27)

गतांक से आगे...

बाह्य अथवा अन्त:करण में कहीं पर भी यह मन सरूप में अवस्थित नहीं है। विषय वस्तुओं का बोध ही मन कहलाता है। संकल्प-विकल्प होना ही मन का स्वभाव है; क्योंकि वह संकल्प में ही रमण कर रहा है। अत: जो संकल्प है, वही मन है, ऐसा जानना चाहिए। आज तक कोई भी संकल्प और मन को पृथक् नहीं कर सका। समस्त संकल्पों के विनष्ट हो जाने पर आत्मस्वरूप ही शेष रहता है।

मेरा-तेरा एवं इस जगत् आदि दृश्य प्रपञ्च (इन्द्रजाल) के शान्त हो जाने पर दृश्य जब सत्ता को अर्थात् परमतत्त्व को प्राप्त कर लेता है, तब तदनुरूप ही वह कैवल्यावस्था को प्राप्त कर लेता है। महाप्रलय की स्थिति आने पर जब सम्पूर्ण दृश्य जगत् अस्तित्व रहित हो जाता है, तब उस समय सृष्टि के पूर्वकाल में केवल प्रशान्त आत्मा मात्र ही शेष रहता है। जो आत्मारूपी सूर्य (सविता) कभी अस्ताचल की ओर गमन नहीं करता, जो अजन्मा एवं सर्वदोषरहित देव है, सदैव सर्वकर्तृता तथा सर्वरूप है; जहाँ वाक्शक्ति जाकर वापस आ जाती है; जिसे मुक्त पुरुष ही जानते हैं और जिसकी आत्मा आदि संज्ञाएँ कल्पना मात्र हैं, स्वाभाविक नहीं हैं; (वे ही अविनाशी परब्रह्म परमेश्वर कहे जाते हैं)।

यदि आप अस्वीकृत और अनंत संकल्प की उस स्थिति में हैं। तब तुम्हें नि:संदेह सर्वव्यापी शांतिपूर्ण धाम की प्राप्ति होगी। 60॥ वह बढ़ती उदारता, सुंदरता और वैराग्य के स्वाद से गर्भवती थी। आनंद के रथ को समाधि कहा जाता है। 61॥ दृष्टि की संभावना को समझकर व्यक्ति राग और द्वेष से अवगत हो सकता है। आकर्षण की वह अवस्था, जो प्रबल रूप से व्यक्त होती है, समाधि कहलाती है। 62॥ दृष्टि की संभावना का बोध ज्ञान है, और जानने योग्य चेतना है। अकेले होने का वह एहसास ही झूठा है, और बाकी सब कुछ झूठा है। **(क्रमश:)**

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल का स्थापना दिवस

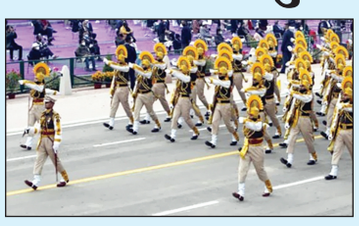

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) का 55वां स्थापना दिवस इस बार छत्तीसगढ़ के भिलाई में आयोजित किया जा रहा है। आईजी संजय प्रकाश के नेतृत्व में होने वाले आयोजन में इंदिरापुरम स्थित सीआईएसएफ की पांचवी बटालियन से भी 150 जवानों की टीम पहुंची हुई है। जिनमें मुख्य ड्रिल प्रशिक्षक निरीक्षक पीके भाटी जवानों को प्रशिक्षण दे रहे हैं। महिला जवानों की टोलियां आकर्षण का केंद्र रहेंगी।

हर साल 10 मार्च को सीआईएसएफ रेजिंग डे के रूप में स्थापना दिवस मनाया जाता है। सीआईएसएफ के जनसंपर्क अधिकारी पीके भाटी ने बताया कि सीआईएसएफ का 55वां स्थापना दिवस भिलाई स्थित मुख्यालय आयोजित किया जा रहा है। इसमें गृह मंत्री अमित शाह मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत कर सकते हैं। पहली बार महिला जवानों की टोलियों को भी शामिल किया गया है। महिला जवानों की बैंड टोली में 60 सदस्य हैं, जिनका नेतृत्व मुंबई में तैनात कांस्टेबल लाईडिज करेंगी। इसके अलावा निशान टोली में सात सदस्य शामिल हैं, जिनका नेतृत्व बीएचईएल (भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड) भोपाल में तैनात सहायक कमांडेंट नुसाईका केके करेंगी। सभी टीमों का नेतृत्व कमांडेंट अभिषेक चौधरी करेंगे।

इस कार्यक्रम में मार्शल आर्ट का डेमो भी दिखाया जाएगा, जिसमें तीन टीमें शामिल हैं। पहली टीम महिला जवानों की है जिसमें 150 जवान शामिल हैं और इस टीम का नेतृत्व हैदराबाद में तैनात डिप्टी कमांडेंट कमलेश बाली करेंगी। दूसरी टीम आतंकी हमलों को रोकने वाली है, जिसमें 125 जवान शमिल हैं। इस टीम का नेतृत्व हैदराबाद में तैनात डिप्टी कमांडेंट दीपक राय करेंगे। तीसरी टीम सीआईएसएफ के अग्निशमन विभाग की है। इस टीम में 89 जवान शामिल हैं और टीम का नेतृत्व हैदराबाद में तैनात डिप्टी कमांडेंट शिव प्रसाद विश्नोई करेंगे।

सीआईएसएफ की स्थापना 10 मार्च, 1969 को भारत की संसद में एक अधिनियम पारित होने के बाद की गई थी। सीआईएसएफ अधिनियम के तहत सीआईएसएफ की स्थापना तीन बटालियनों के साथ की गई थी। केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बलों की स्थापना देश में औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा के लिए की गई थी। सीआईएसएफ को संसद के एक अलग अधिनियम द्वारा सशस्त्र बल बनाया गया था, जिसे 15 जून, 1983 को पारित किया गया था।सीआईएसएफ के कर्तव्य में बेहतर सुरक्षा प्रदान करना और सरकार के संवेदनशील प्रतिष्ठानों और अन्य महत्वपूर्ण सुविधाओं की सुरक्षा करना शामिल है। जैसे कि हम आपको पहले ही बता चुके है कि पूरे देश में 300 से अधिक औद्योगिक इकाइयों और सरकारी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए सीआईएसएफ सुरक्षा प्रदान करता है। यह भारत सरकार के भीतर निजी उद्योगों और अन्य संगठनों को परामर्श सेवाएं भी प्रदान करता है। सीआईएसएफ की कुछ बटालियन कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल के लिए भी काम करती हैं।

पाक की सियासत और चूहे-बिल्ली का खेल

राजेश बादल

असल में भुट्टो और शरीफ खानदानों में हमेशा टकराव रहा है. इसके बावजूद दोनों किसी न किसी दौर में फौज की गोद में बैठते रहे हैं। सेना इस टकराव का लाभ उठाती रही है। दोनों कुनबों की फौज से प्यार और तकरार की दास्तान बड़ी दिलचस्प है। एक जमाने में नवाज शरीफ तो सैनिक तानाशाह जनरल जिया उल हक के चहेते थे। जब 1985 में पंजाब के चुनाव हुए तो फौज के समर्थन से नवाज शरीफ ने चुनाव जीता।

पाकिस्तान में शाहबाज शरीफ एक बार फिर प्रधानमंत्री के ओहदे पर हैं। इस बार भी वे फौज के कंधों पर सवारी करते हुए सत्ता में आए । यदि सेना समर्थन नहीं करती तो मुल्क फिर अंधी सियासी सुरंग में समा जाता। पिछले गठबंधन के कड़वे अनुभव पीपल्स पार्टी और पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) भूल नहीं पाए थे कि उनकी नियति ने फिर संयुक्त सत्ता संभालने पर मजबूर कर दिया। चुनाव नतीजों ने सेना के लिए भी कोई विकल्प नहीं छोड़ा था। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने जेल में रहते हुए जिस तरह अपनी पार्टी का नेतृत्व किया, उसी का परिणाम था कि अवाम ने जनादेश तहरीके इन्साफ को दिया. इमरान को अस्त्र-शस्त्र विहीन कर दिया गया। उन्हें चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य करार दिया गया, उनकी पार्टी का चुनाव चिह्न छीन लिया गया। एक तरह से फौज ने वे सारे प्रबंध कर दिए थे, जो शरीफ बंधुओं की पार्टी को वाकओवर दिलाने के लिए काफी थे। यहां तक कि लंदन में बीमारी से कराह रहे नवाज शरीफ तक को उछलते हुए आकर चुनाव प्रचार करने की छूट दिला दी।

इसके बाद भी यदि मतदाताओं ने उनके प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई तो क्या किया जा सकता है? यह एक तरह से फौज की पराजय ही है। मगर, इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह सत्ता के लिए अपना प्रधानमंत्री चुनती है और जब वह प्रधानमंत्री उड़ान भरने लगता है तो सेना उसके नीचे से जाजम खींच लेती है। असल में भुट्टो और शरीफ खानदानों में हमेशा टकराव रहा है. इसके बावजूद दोनों किसी न किसी दौर में फौज की गोद में बैठते रहे हैं। सेना इस टकराव का लाभ उठाती रही है। दोनों कुनबों की फौज से प्यार और तकरार की दास्तान बड़ी दिलचस्प है। एक जमाने में नवाज शरीफ तो सैनिक तानाशाह जनरल जिया उल हक के चहेते थे। जब 1985 में पंजाब के चुनाव हुए तो फौज के समर्थन से नवाज शरीफ ने चुनाव जीता और जिया ने ही उन्हें पंजाब का मुख्यमंत्री बनाया था। भुट्टो ने प्रधानमंत्री रहते हुए मिलों का राष्ट्रीयकरण किया था तो शरीफ परिवार की दुधारू स्टील मिल हाथ से निकल गई थी। इसके बाद नवाज ने कभी भुट्टो को पसंद नहीं किया।

यहां तक कि जब जिया ने भुट्टो को फांसी दी तो नवाज ने उनकी आत्मा के लिए दुआ करने से इनकार कर दिया था। इसके बाद भी मियां नवाज सेना के इशारों पर नाचते रहे। उसका परिणाम उन्हें 1990 के चुनाव में मिला। नवाज शरीफ सेना के इशारे पर प्रधानमंत्री बन गए थे। तत्कालीन आईएसआई प्रमुख जनरल असद दुर्रानी ने तो चुनाव के बाद खुलासा कर दिया था कि उन्होंने बेनजीर की पार्टी के खिलाफ गुप्त बजट से छह करोड़ रुपए खर्च किए थे और नवाज शरीफ को प्रचार के लिए करोड़ों रुपए की सहायता दी थी। मतगणना में भी बड़े पैमाने पर धांधली हुई थी। तब कहीं जाकर नवाज शरीफ प्रधानमंत्री बन पाए थे। कुछ दिन फौज के साथ हनीमून के बाद दोनों का एक-दूसरे से मोहभंग हो गया। फौज बेहद आक्रामक अंदाज में कश्मीर समस्या निपटाना चाहती थी. नवाज हिचक रहे थे। वे भारत से अच्छे रिश्ते चाहते थे। फौज कश्मीर में आतंकवाद को शह देती रही। नवाज बचते रहे. फासला बढ़ता गया और 1993 में उन्हें बर्खास्त कर दिया गया चुनाव हुए। बेनजीर भुट्टो फिर प्रधानमंत्री बन गईं लेकिन 1997 के चुनाव में फिर नवाज शरीफ को मौका मिला. सत्ता संभालते ही नवाज शरीफ की सेना से फिर ठन गई।

सेनाध्यक्ष जहांगीर करामत से मतभेद सामने आए। नवाज भारत से अच्छे रिश्ते चाहते थे। फौज विरोध में थी आखिरकार जहांगीर को हटा दिया गया और नवाज शरीफ परवेज मुशर्रफ को इस पद पर ले आए। परवेज मुशर्रफ ने कारगिल कांड कराया और नवाज शरीफ की किरकिरी हुई। मतभेद यहां तक बढ़े कि नवाज शरीफ को मुशर्रफ ने गद्दी से उतार दिया। जब 2008 के चुनाव आए तो मतदाताओं ने भुट्टो की पीपुल्स पार्टी और नवाज शरीफ की पीएमएल-एन को चुना मुशर्रफ की पार्टी फिसड्डी रही। इसके बाद वे परदेस भाग गए। नवाज और जरदारी की पार्टियों की आपस में कभी नहीं बनी, मगर मुशर्रफ के खिलाफ दोनों एक हो गए. जरदारी राष्ट्रपति बने। कुछ दिन बाद ही उनके नवाज से मतभेद शुरू हो गए। जब 2013 के चुनावों का ऐलान हुआ तो मुशर्रफ लौट आए लेकिन अदालत ने उन्हें चुनाव के लिए अयोग्य घोषित कर दिया। उन्हें भगोड़ा घोषित कर दिया गया और वे गिरफ्तार कर लिए गए. इस बार चुनाव में फिर नवाज शरीफ को अवसर मिला। वे तीसरी बार प्रधानमंत्री बने लेकिन फौज और न्यायपालिका से ठन गई। परिणाम यह कि पद से इस्तीफा देना पड़ा, चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित किया गया।

वे बेटी दामाद के साथ जेल में थे. फायदा इमरान खान ने उठाया। फौज ने उन पर हाथ रख दिया पर हनीमून लंबा नहीं चला। इमरान ने सेना की धुन पर नाचना बंद कर दिया। इसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ा। पद छोड़ना पड़ा और वे अब जेल में हैं। शाहबाज शरीफ प्रधानमंत्री पद पर हैं। चूंकि नवाज शरीफ को फौज से बैर मोल लेने की पुरानी आदत थी, इसलिए सेना इस बार उन्हें प्रधानमंत्री नहीं बनाना चाहती थी। पार्टियों और सेना के बीच इस चूहे-बिल्ली के खेल में पाकिस्तान के अपने हित हाशिये पर जाते रहे हैं। सवाल यह है कि पाकिस्तान की नई सरकार भारत के साथ आगे कैसे बढ़ेगी? शाहबाज शरीफ ने तो प्रधानमंत्री बनते ही भारत के साथ शत्रुता भरे बयान देने शुरू कर दिए हैं। वे कश्मीर राग अलापने लगे हैं। वे कहते हैं कि कश्मीर मसले पर हमारा खून खौल रहा है। ढुलमुल नीतियों के चलते वे दो कदम आगे चलते हैं तो चार कदम पीछे चलते हैं। सोलह महीने चली उनकी गठबंधन सरकार ने और उससे पहले इमरान खान की हुकूमत ने देश को आर्थिक बिखराव के जिस हाल में पहुंचा दिया है, उससे उबरने के लिए पाकिस्तान को बहुत मेहनत करनी होगी। उसे समझना होगा कि अंतत: भारत ही उसकी प्राणवायु है भारत के बिना उसकी गति नहीं है।

आज का इतिहास

1945 द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमरीकी युद्धक विमानों ने जापान की राजधानी टोकियो पर भीषण बमबारी की। जिसके कारण टोकियो के लगभग 1 लाख आम नागरिक मारे गये।
1946 ब्राजील में हुए रेल हादसे में 1855 लोगों की मौत हो गई।
1952 पूर्व चुनाव के लिए कानून द्वारा निषिद्ध, क्यूबा के पूर्व राष्ट्रपति फुलगेन्सियो बतिस्ता ने नियंत्रण फिर से शुरू करने के लिए तख्तापलट का मंचन किया।
1959 14 वीं दलाई लामा को चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी द्वारा छोड़ने या निकाले जाने से रोकने के लिए, लगभग 300,000 तिब्बतियों ने पोटाला पैलेस को घेरने के बाद, तिब्बत की राजधानी ल्हासा में एक चीनी विरोधी विद्रोह भड़क उठा।
1960 अगादिर की मलबे में से आठ लोगों को जिंदा निकाला गया, घातक भूकंप के दस दिन बाद भी मोरक्को में 12,000 लोग मारे गए।
1965 थॉमस प्लेफोर्ड , दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के प्रीमियर, 27 साल के बाद छोड़ दिया, ऑस्ट्रेलिया के इतिहास में किसी भी लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित विधायक का सबसे लंबा कार्यकाल है।
1966 दक्षिण वियतनाम के सैन्य प्रधान मंत्री गुयेन एन काओ के? बर्खास्त प्रतिद्वंद्वी जनरल गुयगी एन चन्ह थी, राष्ट्र के कुछ हिस्सों में बड़े पैमाने पर नागरिक और सैन्य विघटन।
1968 वियतनाम युद्ध / लाओटियन सिविल वॉर-नॉर्थ वियतनामी और पैटेट लाओफोरिस ने अमेरिकी, लाओटियन, थाई और हमोंग डिफाल्ट ऑफ लाइमा साइट 85 को पछाड़ दिया।
1975 हो ची मिन्ह अभियान-उत्तरी वियतनाम ने बैन मी थॉट पर हमले के साथ दक्षिण वियतनाम पर अपना अंतिम धक्का देना शुरू कर दिया।
1977 नासा के कूपर एयरबोर्न वेधशाला का उपयोग करने वाले खगोलविदों ने एक अत्यधिक संशोधित जेट विमान में एक वेधशाला का उपयोग किया, यूरेनस के आसपास एक बेहोश ग्रहों की अंगूठी प्रणाली की खोज की।
2003 उत्तर कोरिया ने क्रूज मिसाइल का परीक्षण किया।
2005 हांगकांग के पहले मुख्य कार्यकारी, तुंग चे-ह्वा ने अपने त्यागपत्र के बाद व्यापक असंतोष के बाद अपने इस्तीफे की घोषणा की।
2006 नासा के मार्स रिकॉनिनेस ऑर्बिटर ने मंगल ग्रह की परिक्रमा की।
2006 पाकिस्तान के क्वेटा शहर में बारूदी सुरंग विस्फोट में 26 लोग मारे गये।
2010 11 दिसंबर, 2009 को पूर्व साइप्रस देश के पूर्व राष्ट्रपति टैसोस पापाडोपोलोस की लाश की चोरी के संबंध में तीन लोगों को हिरासत में लिया गया है।
2011 विस्कॉन्सिन राज्य के कर्मचारियों से लगभग सभी सामूहिक सौदेबाजी को हटाने के लिए सांसदों ने सफलतापूर्वक वोट दिया।
2011 तिब्बती निर्वासन आंदोलन के प्रमुख 14 वें दलाई लामा, दिनों के भीतर रिटायर होने की योजना बना रहे हैं।
2012 फ्रांसीसी हास्य कलाकार जीन जिराउद का 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह ब्लूबेरी के निर्माता और कई प्रभावशाली विज्ञान-कथा कॉमिक्स थे।
2012 फ्रांसीसी कॉमिक कलाकार जीन जिराउड, ब्लूबेरी के निर्माता और कई प्रभावशाली विज्ञान-कथा कॉमिक्स, 73 में मर जाते हैं।

तीन नए सहयोगियों के साथ एनडीए और मजबूत होगा

अजय सेतिया

उड़ीसा, आंध्र प्रदेश और पंजाब में नए समीकरण इन्तजार कर रहे हैं। उड़ीसा में बीजू जनता दल का 15 साल बाद एनडीए में वापस लौटना लगभग तय है। आंध्र प्रदेश में चंद्रबाबू नायडू की तेलगू देशम पार्टी का एनडीए में लौटना तय लग रहा है, तेलुगु देशम के साथ पवन कल्याण की प्रजा राज्यम पार्टी भी एनडीए में शामिल हो रही है। चंद्रबाबू नायडू पिछले लोकसभा चुनावों से ठीक पहले 2018 में एनडीए छोड़कर गए थे।

एनडीए छोड़ने के बाद उन्होंने भाजपा के खिलाफ उसी तरह मोर्चा बनाने की कोशिश की थी, जैसे इस बार नीतीश कुमार ने एनडीए छोड़ने के बाद इंडी एलायंस बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका बनाई थी। नीतीश कुमार को चुनावों से पहले ही समझ में आ गया कि विपक्ष कितनी भी कोशिश कर ले, वह मोदी को नहीं हरा सकता। लेकिन चंद्रबाबू नायडू को 2019 का विधानसभा और लोकसभा चुनाव हारने के बाद समझ में आया था कि उन्होंने एनडीए छोड़कर बड़ी गलती की। अकेले चुनाव लड़कर वह लोकसभा की सिर्फ 3 सीटें जीत पाए थे, जबकि जग्गन मोहन रेड्डी की वाईएसआर कांग्रेस 22 लोकसभा सीटें जीत गई थी, और विधान सभा में उसे दो तिहाई से भी ज्यादा बहुमत मिल गया था। चंद्रबाबू नायडू पिछले एक साल से एनडीए में शामिल होने की कोशिश कर रहे हैं, जब इंडी एलायंस का गठन हुआ था, उस समय भी उन्हें एनडीए में शामिल किए जाने की चर्चा थी। चंद्रबाबू नायडू की हाल ही में अमित शाह से दो बार बातचीत हो चुकी है। इस बातचीत में सीटों पर भी चर्चा हो चुकी है। चंद्रबाबू नायडू और पवन कल्याण की बातचीत कभी भी हो सकती है।

भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा की 25 में से आठ सीटें माँगी है, जिस पर लगभग सहमति भी हो चुकी है। आंध्र प्रदेश विधानसभा के चुनाव भी लोकसभा चुनावों के साथ होते हैं, इसलिए विधान सभा की सीटों पर भी साथ ही सहमति होनी है। चंद्रबाबू नायडू भाजपा को विधानसभा की 175 सीटों में से 30 से 35 सीटें देने पर सहमत हो सकते हैं। पवन कल्याण कापू जाति से आते हैं, जिसका ईस्ट गोदावरी, वेस्ट गोदावरी, गुंटूर, कृष्णा, कर्नूल, कल्पा आदि जिलों में अच्छा खासा प्रभाव है। गठबंधन में कापू समुदाय के प्रभाव वाली करीब 35-40 सीटों पर पवन कल्याण की प्रजा राज्यम पार्टी भी चुनाव लड़ेगी। बाकी बची करीब सौ या उससे कुछ ज्यादा सीटों पर चंद्रबाबू नायडू की पार्टी चुनाव लड़ेगी। अगर सीटों का बंटवारा ठीक ठाक हो गया, तो एनडीए की आंध्र प्रदेश में बम्पर जीत हो सकती है। पिछली बार भाजपा का किसी के साथ गठबंधन नहीं था, इसलिए भाजपा आंध्र प्रदेश से लोकसभा की एक भी सीट नहीं जीत सकी थी। तेलुगु देशम, भाजपा और प्रजा राज्यम का गठबंधन कभी भी हो सकता है। आंध्र प्रदेश की आज की राजनीतिक स्थिति ऐसी है कि चंद्रबाबू नायडू, पवन कल्याण और मोदी के गठबंधन वाला एनडीए राज्य की सभी 25 लोकसभा सीटें भी जीत सकता है।

दूसरी तरफ जगन मोहन रेड्डी भी एक समय भाजपा के साथ चुनावी गठबंधन करने के इच्छुक थे, लेकिन भारतीय जनता पार्टी का फीडबैक यह था कि उनका प्रभाव खत्म हो रहा है, और चंद्रबाबू का पलड़ा भारी है। दूसरा कारण यह था कि आंध्र प्रदेश का हिन्दू वोटर जगन मोहन रेड्डी की ईसाईपरस्त राजनीति के कारण उनसे नाराज है। अगर भाजपा जगन मोहन रेड्डी से गठबंधन करती, तो हिन्दू वोटर भाजपा से नाराज हो जाता। बाद

में जगन मोहन रेड्डी खुद ही पीछे हट गए, क्योंकि उन्हें उनके समर्थकों ने बताया कि मुस्लिम वोटर नाराज हो कर चंद्रबाबू नायडू के साथ चले जाएंगे, इसलिए चंद्रबाबू नायडू को ही भाजपा से गठबंधन करने दो। एक समय जगन मोहन रेड्डी कांग्रेस के साथ गठबंधन पर भी विचार कर रहे थे, लेकिन कांग्रेस ने उनके परिवार में फूट डाल कर उनकी बहन शर्मिला रेड्डी को पार्टी में शामिल करवा कर उन्हें प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बना दिया। जिससे जगन मोहन रेड्डी कांग्रेस से बेहद खफा हैं। इसलिए जगन के पास कोई ज्यादा विकल्प नहीं बचा है।

उड़ीसा के सत्ताधारी बीजू जनता दल का भी 15 साल बाद एनडीए में लौटना करीब करीब तय माना जा रहा है। उड़ीसा के विधानसभा चुनाव भी लोकसभा चुनावों के साथ होते हैं। 1998 से 2009 तक बीजू जनता दल एनडीए में था। 2009 के लोकसभा चुनाव से पहले बीजू जनता दल ने एनडीए छोड़ दिया था, तब भाजपा ने गठबंधन बचाने की बहुत कोशिश की थी, लेकिन नाकाम रही थी। बीजू जनता दल ने एनडीए छोड़ने के बावजूद भाजपा से सोहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे। 2014 में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद बीजू जनता दल ने संसद में संकट की हर घड़ी में केंद्र सरकार का साथ दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के साथ संपर्क में हैं। अभी दो दिन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उड़ीसा दौरे के समय नवीन पटनायक के साथ उनकी केमिस्ट्री देखने के बाद कोई और तो क्या कांग्रेस महामंत्री जयराम रमेश ने ही कहा कि बीजू जनता दल भाजपा का नया पार्टनर होगा। सरकारी कार्यक्रम में जब मुख्यमंत्री नवीन पटनायक मंच पर मौजूद थे, तब प्रधानमंत्री ने उनकी और उनके पिता बीजू पटनायक की जमकर तारीफ़ की।

इस कार्यक्रम में मोदी का भाषण सुनने के बाद चौधरी चरण सिंह की तरह बीजू पटनायक को भी भारत रत्न दिए जाने की अटकलें लगनी शुरू हो गई। अभी नहीं, तो यह तय मानिए कि मोदी की तीसरी सरकार में सबसे पहले बीजू पटनायक को ही भारत रत्न की उपाधि मिलेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उड़ीसा दौरे के बाद नवीन पटनायक ने अपने घर पर अपने दल के नेताओं के साथ गठबंधन पर बातचीत की, जबकि उसी दिन गृहमंत्री अमित शाह ने दिल्ली में उड़ीसा के भाजपा नेताओं से मुलाक़ात की। उन्होंने भी बीजू जनता दल के एनडीए में लौटने की स्थिति में उड़ीसा की राजनीतिक स्थिति पर विचार विमर्श किया। उड़ीसा में लोकसभा की 21 सीटें हैं, जिनमें से 12 बीजू जनता दल के पास हैं, और आठ भाजपा के पास है, जबकि बाकी बची एक सीट कांग्रेस के पास है। गठबंधन की स्थिति में भाजपा लोकसभा में आधी से ज्यादा यानी 11 सीटों की मांग कर रही है, जबकि विधानसभा में वह एक तिहाई सीटें चाहती है। अगर बीजू जनता दल भाजपा को ग्यारह सीटें देने को तैयार हो जाता है, तो उसे अपनी जीती हुई दो सीटें भी छोड़नी पड़ेंगी।

तीसरा राजनीतिक दल पंजाब का अकाली दल है, जो 2020 के किसान आन्दोलन तक एनडीए में शामिल था। एनडीए से निकलने के बाद 2022 के पंजाब विधानसभा चुनावों में अकाली दल तीसरे नंबर की पार्टी बन कर रह गया। आम आदमी पार्टी ने चुनाव जीत कर सरकार बनाई और कांग्रेस विपक्षी पार्टी बनी। अकाली दल और भाजपा का गठबंधन 1967 से जनसंघ के जमाने से चल रहा था। अब अकाली दल वापस लौटना चाहता है, दो दौर की बातचीत भी हो चुकी है, लेकिन बात सीट शेयरिंग पर अटकी है। पहले अकाली दल और भाजपा के गठबंधन में लोकसभा की तीन अमृतसर, गुरदासपुर और होशियारपुर सीटें भाजपा लड़ती थी, बाकी 10 सीटें अकाली दल लड़ता था। इसी तरह विधानसभा की 23 सीटें भाजपा लड़ती थी, जबकि 90 सीटों पर अकाली दल लड़ता था। अब जब एक बार गठबंधन टूट चुका है, तो भाजपा नए सिरे से सीट शेयरिंग करना चाहती है। अब भाजपा ने लोकसभा की 13 में से सात सीटों पटियाला, लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर, गुरदासपुर, होशियारपुर और आनंदपुर साहिब की मांग रख दी है। इनमें से गुरदासपुर को छोड़कर बाकी सभी शहरी सीटें हैं। भाजपा की आधी से ज्यादा सीटों की मांग पर बातचीत टूट गई है, लेकिन उसके दुबारा शुरू होने के आसार है, क्योंकि अकाली दल को भी पता है कि भाजपा के बिना शायद वह एक सीट भी नहीं जीत सकता।

आखिर कैसे नियंत्रित हो सियासत में कालेधन का इस्तेमाल ?

पंकज चतुर्वेदी

एक जनकल्याणकारी और लोकतंत्रात्मक शासन के लिए चुनावी तंत्र में आमूलचूल परिवर्तन अनिवार्य है और इसकी शुरुआत वित्तीय तंत्र से ही करनी होगी। ऐसा नहीं कि चुनाव सुधार के कोई प्रयास किए ही नहीं गए, लेकिन विडंबना है कि सभी सियासती पार्टियों ने उनमें रुचि नहीं दिखाई। वी.पी. सिंह वाली राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार में कानून मंत्री दिनेश गोस्वामी की अगुआई में सन? 1990 में गठित चुनाव सुधारों की कमेटी का सुझाव था कि राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त दलों को सरकार की ओर से वाहन, ईंधन, मतदाता सूचियां, लाउड-स्पीकर आदि मुहैया करवाए जाने चाहिए। इसमें यह भी कहा गया था

कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त और अन्य निर्वाचन आयुक्तों को न केवल सरकार के अंतर्गत किसी नियुक्ति बल्कि राज्यपाल के पद सहित किसी अन्य पद के लिए अयोग्य घोषित किया जाना चाहिए। साथ ही किसी भी व्यक्ति को दो से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव लड़ने की अनुमति न देने, निर्दलीय चुनाव लड़ने पर जमानत राशि बढ़ाने की बात भी इस रिपोर्ट में थी। इन सिफारिशों में से केवल एक ईवीएम से चुनाव को लागू किया गया, शेष सुझाव कहीं ठंडे बस्ते में पड़े हैं। 1984 में भी चुनाव खर्च संशोधन के लिए एक गैरसरकारी विधेयक लोकसभा में रखा गया था, पर नतीजा वही 'ढाक के तीन पात' रहा. सन? 1962 में सांसद के। संथानम की अध्यक्षता में चार सांसदों और दो आला अफसरों की एक कमेटी भ्रष्टाचार के विभिन्न पहलुओं की जांच के लिए गठित की गई थी। हालांकि इस कमेटी के दायरे में राजनीतिक लोग नहीं थे, फिर भी सन 1964 में आई इसकी रिपोर्ट में कहा गया था कि राजनैतिक दलों का चंदा एकत्र करने का तरीका चुनाव के दौरान और बाद में भ्रष्टाचार को बेहिसाब बढ़ावा देता है। 1970 में प्रत्यक्ष कर जांच के लिए गठित वांचू कमेटी की रपट में कहा गया था कि चुनावों में अंधाधुंध खर्च कालेधन को प्रोत्साहित करता है। इस रपट में हरेक दल को चुनाव लड़ने के लिए सरकारी अनुदान देने और प्रत्येक पार्टी के अकाउंट का नियमित ऑडिट करवाने के सुझाव थे। राजा चेलैया समिति ने भी लगभग यही सिफारिशें की थीं. ये सभी दस्तावेज अब भूली हुई कहानी बन चुके हैं। अगस्त-98 में एक जनहित याचिका पर फैसला सुनाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिए थे कि उम्मीदवारों के खर्च में उसकी पार्टी के खर्च को भी शामिल किया जाए। आदेश में इस बात पर खेद जताया गया था कि सियासती पार्टियां अपने लेन-देन खातों का नियमित ऑडिट नहीं कराती हैं। अदालत ने ऐसे दलों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही के भी निर्देश दिए थे। लेकिन हुआ कुछ भी नहीं। चुनाव प्रक्रिया में शुचिता, पारदर्शिता और खर्च कम करना आज लोकतंत्र के सशक्तिकरण की अनिवार्य जरूरत है।

महत्वाकांक्षा और मजबूरी के बीच मुकाबला!

अमिताभ श्रीवास्तव

जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव का समय समीप आता जा रहा है, वैसे-वैसे भारतीय जनता पार्टी अपने 'अबकी बार चार सौ के पार' के सपने को साकार करने में जुटती जा रही है। इस इरादे में उसे सिर्फ जीत के समीकरण ही दिखाई दे रहे हैं और उसे पराजय का किसी भी कीमत पर खतरा मोल नहीं लेना है। वहीं दूसरी ओर महाराष्ट्र के उसके सहयोगी और अन्य दल भाजपा की आकांक्षा को लेकर कहीं न कहीं असहज महसूस करने लगे हैं। हालत यह है कि दूसरे दलों को उनकी सीमाओं का अहसास करा कर जिद छोड़ने तक बात कहने में कोई चूक नहीं रहा है।

चुनावी राजनीति पर नजर रखने वाले यह अच्छी तरह से जानते हैं कि महाराष्ट्र में भाजपा का सफर शून्य से आरंभ हुआ था। पहली बार उसने 20 सीटों पर चुनाव लड़ते हुए किसी भी सीट पर विजय पाने में सफलता हासिल नहीं की थी। उसके बाद वर्ष 1989 में 33 सीटों पर चुनाव लड़ने के बाद 10 सीटों पर सफलता मिली। मगर वर्ष 1991 में कांग्रेस की वापसी के समय वह 31 सीटों पर चुनाव लड़कर पांच सीटों पर सिमट गई।

वर्ष 1996 में 25 सीटों पर चुनाव लड़ने पर उसे 18 सीटें मिलीं। मगर वर्ष 1998 में 25 सीटों पर मुकाबले में उतरते हुए चार सीटों पर बात खत्म हो गई। वर्ष 1999 में 26 सीटों पर चुनाव लड़ते हुए 13 स्थानों पर जीत मिली, जबकि वर्ष 2009 में 25 स्थानों पर चुनाव लड़कर नौ स्थानों पर विजय मिली। बाद में वर्ष 2014 और 2019 में क्रमशः 24 और 25 सीटों पर चुनाव लड़ने के बाद जीत 23-23 सीटों पर मिली, जो पार्टी की सर्वश्रेष्ठ स्थिति थी। किंतु यह शिवसेना के साथ गठबंधन पर ही मिली विजय थी। अब 2024 में भाजपा का अपने सहयोगियों के साथ लक्ष्य 45 सीटें जीतने का है, जिसमें से वह 35 सीटें खुद लड़ने का इरादा रखती है। यह आकांक्षा देश में उसके प्रति बने सकारात्मक माहौल के कारण है, किंतु वर्तमान में वह एक नए गठबंधन में है, जिसमें उसके साथ टूटी हुई शिवसेना और राकांपा है, जिनका जन्म स्वयं को सिद्ध करने के लक्ष्य के साथ ही हुआ है। यदि 35 सीटें अपने पास रखने के बाद भाजपा 13 सीटें अपने सहयोगियों को

देती है तो उनके पास कोई बड़ा आंकड़ा नहीं होगा।

अलग हुआ शिवसेना का शिंदे गुट चालीस से अधिक विधायकों को अपने साथ रखता है, जबकि 12 सांसद उस गुट में हैं। इसलिए यदि भाजपा 35 सीटों पर चुनाव लड़ती है तो सभी को दोबारा टिकट मिलने की संभावना बहुत कम है। इसी प्रकार राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी(राकांपा) के पास 41 विधायक हैं और दो सांसद है। यदि भाजपा के आंकड़े के हिसाब से उन्हें मौका मिलता है तो वह महज दिखावा होगा। बावजूद इसके कि वर्तमान लोकसभा में भाजपा के 23 सांसद हैं, उसकी दावेदारी 35 सीटों के लिए है। हालांकि इतिहास के सापेक्ष उसकी महत्वाकांक्षा व्यावहारिक नजर नहीं आती है। किंतु देश में चार सौ के पार का नारा देने के बाद बड़े राज्यों से ही अधिक सीटों की अपेक्षा की जा सकती है, जिसमें महाराष्ट्र दूसरे नंबर पर आता है।

भाजपा यदि अपनी लड़ाई 35 तक ले जाती है और उसके सहयोगियों को कम सीटें ही मिलती हैं तो भविष्य में उन्हें अपनी सीमाओं को समझना होगा और हर मोर्चे पर भाजपा को बड़े भाई की भूमिका में स्वीकार करना होगा। वर्तमान में भाजपा के सहयोग से चालीस से अधिक विधायक होने के बावजूद शिवसेना शिंदे गुट का राज्य में मुख्यमंत्री है। इसी प्रकार चालीस से ही कुछ अधिक विधायकों के साथ राकांपा अजित पवार गुट का राज्य सरकार में उपमुख्यमंत्री है। यदि दोनों गुटों की महत्वाकांक्षा को देखा जाए तो दोनों अपने नेताओं को भविष्य में मुख्यमंत्री के रूप में ही देखना चाहते हैं। यदि वर्तमान स्थिति में समझौता कर भी लिया जाता है तो भविष्य सुनहरा होगा, इस बात की भी गारंटी कहीं से मिल नहीं रही है। इसलिए समझौते के लिए कितना मोलभाव किया जाए, इसका अनुमान लगाना भी आसान नहीं है।

अब नाउम्मीद और उम्मीद के दौर में महत्वकांक्षा तथा मजबूरी के बीच संघर्ष की बिसात तैयार हो रही है। इस पर जीत-हार के मायने केवल एक चुनाव तक सीमित नहीं होंगे। इनसे महाराष्ट्र में भविष्य की राजनीति की दिशा तय होगी। राज्य में राजनीतिक दलों का इतना बड़ा बिखराव पहले कभी नहीं दिखाई दिया। यदि दल अलग-अलग हुए भी तो चुनाव तक उनमें कोई समझौता-सहमति बनी। इस बार संघर्ष आमने-सामने का है. अवसर विजय के बाद स्वयं को सिद्ध करने का है। किंतु भाजपा को छोड़ सभी दलों के पास संकट एक समान सा है। टूटे दलों के पास दोबारा नए संगठन को मजबूती से खड़ा करते हुए चुनावी मैदान को संभालने की चुनौती है तो दूसरी ओर उनके मूल संगठन में कोशिश निष्ठा के नाम पर मतदाताओं की सहानुभूति बटोरने की है। दोनों ही स्थितियों में विश्वास का संकट है। ऐन वक्त पर आवाजाही की चिंता है। नए संगठन के गठन की जमीनी मजबूरियां हैं। इस सब पर भाजपा का अपनी महत्वकांक्षा को पूरा करने के लिए हर तरह का दबाव है।

फिलहाल यह तय है कि महाराष्ट्र में पांचों दलों के सामने चिंताएं एक समान हैं। भाजपा अपना लक्ष्य पाना चाहती है तो शिवसेना के दोनों भाग अपनी प्रतिष्ठा को सिद्ध करने की तैयारी में हैं। राकांपा के दोनों घटकों के समक्ष परिवार की असली पहचान का संकट है। वे अतीत से भविष्य का सफर तय कर रहे हैं। इन पांचों के बीच अतिरिक्त कड़ी में कांग्रेस है, जिसका भविष्य अब दूसरों के हाथों में चला गया। कुल जमा लोकसभा चुनाव के मुहाने पर महाराष्ट्र में सब कुछ नया और अलग ही देखा जाएगा। दल चाहे कोई भी हो, अपनी कहानी लिखने में असहज ही नजर आएगा।

लोकतंत्र के शुभ को आहत करने वाले अपराधी नेता

ललित गर्ग

आपराधिक छवि वाले या जघन्य अपराधों में लिप्त लोगों को राजनीति दलों का संरक्षण मिलना भारतीय लोकतंत्र की बड़ी विडम्बना है। तृणमूल कांग्रेस के नेता शाहजहां शेख को संदेशखाली हिंसा, जमीन घोटाले, स्कूल घोटाले, देह व्यापार के धंधे व यौन उत्पीड़न के आरोप में आखिर सीबीआइ के सुपुर्द कर दिया गया। लोकतंत्र की दुहाई देने वाली पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार लगातार अदालती आदेशों की धज्जियां उडाती रही, ममता ने शाहजहां शेख को सीबीआई को सुपुर्द करने के मामले में जो गैरजिम्मेदाराना एवं अलोकतांत्रिक रवैया अपनाया वह आश्चर्यजनक और चिंताजनक है। यह कैसी विवशता है राजनीतिक दलों की? अक्सर राजनीति को अपराध मुक्त करने के दावे की हकीकत ऐसे ही अवसरों पर सामने आती है। कलकत्ता उच्च न्यायालय के दुबारा आदेश के बावजूद संदेशखाली मामले के आरोपी को सीबीआइ के सुपुर्द करने में देरी होना न केवल समझ से परे है बल्कि यह लोकतंत्र एवं न्याय व्यवस्था की अवमानना है। इस पूरे प्रकरण से राजनीति समझ में आती है जो एक आरोपी को लेकर हो रही है।

लोकसभा चुनाव आने वाले हैं और राज्य में भारतीय जनता पार्टी और तृणमूल कांग्रेस शेख के मामले को एक राजनैतिक मुद्दा बनाने पर तुले हुए हैं। आज भारत की आजादी का अमृत महोत्सव की परिसम्पन्नता पर एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि शेख पर गंभीर आरोपों के बावजूद ममता सरकार उसे बचाने में लगी रही। शेख अपने इलाके संदेशखाली में महिलाओं का उत्पीड़न करता था और देह व्यापार के धंधे में भी संलग्न था। ये आरोप गंभीर हैं जिनकी गहनता से जांच होनी चाहिए। मगर हो यह रहा है कि राज्य सरकार शेख की रक्षा में नजर आ रही है और भाजपा लगातार आक्रमण

कर रही है। विडम्बना यह है कि शाहजहां शेख कोई समाजसेवी न होकर वर्तमान दौर का मुनाफेबाज नेता, व्यभिचारी, हिंसा एवं अराजकता फैलाने का आरोपी है। वैसे तो ममता दीदी की सरकार में कई घोटाले हुए हैं मगर स्कूल घोटाले में शाहजहां शेख का नाम आने पर प्रवर्तन निदेशालय ने उसके खिलाफ जब जांच शुरू की तो हंगामा बरपा हो गया। प्रवर्तन निदेशालय की टीम विगत जनवरी माह के पहले सप्ताह में जब शाहजहां शेख के यहां संदेशखाली पहुंची तो स्थानीय तृणमूल कार्यकर्ताओं ने उस टीम पर हमला बोल दिया। इनमें अधिसंख्य शेख के समर्थक ही थे।

तृणमूल कांग्रेस एवं उनके नेताओं पर लगे गंभीर आरोपों के बाद एक बार फिर इस सवाल ने जोर पकड़ा है कि जो लोग राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त बनाने की बात करते हैं, वे हर बार मौका मिलने पर अपने संकल्प एवं बेदाग राजनीति के दावों से पीछे क्यों हट जाते हैं? तृणमूल कांग्रेस में शेख जैसे नेताओं की कमी नहीं हैं। संदेशखाली से महिलाओं के यौन उत्पीड़न और जमीनों के कब्जे को लेकर आ रही खबरें डराने वाली हैं। इन खबरों में कितनी सच्चाई है, इसका फैसला तो अदालत ही करेगी। तो फिर आरोपी को बचाने के लिए पश्चिम बंगाल सरकार एड़ी-चोटी का जोर क्यों लगाती रही? यहां सवाल तृणमूल कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी का अथवा किसी अन्य दल का नहीं है। सवाल है, महिलाओं की अस्मिता से खेलने के आरोपियों को सजा दिलाने का। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री स्वयं महिला हैं और उन्होंने एक महिला के अस्तित्व एवं अस्मिता को नौंचने वाले नेता को क्यों राजनीतिक संरक्षण दिया?

आज राजनीति की दशा बदतर है कि यहां जनता के दिलों पर राज करने के लिये नेता अपराध, भ्रष्टाचार एवं चरित्रहीनता का सहारा लेते हैं। जातिवाद, प्रांतवाद, साम्प्रदायिकता को आधार बनाकर जनता को तोड़ने की कोशिशें होती है। यह अजीब स्थिति है कि अक्सर साफ-सुथरी और ईमानदार सरकार देने के दावों के बीच आपराधिक छवि के लोगों को उच्च पद देने या अपने दल का नेता बनाने का सवाल उभर जाता है। सवाल है कि क्या ममता अपने ही दावों को लेकर वास्तव में गंभीर हैं? ऐसे जिम्मेदार राजनेता अपने दावों से पीछे हटेंगे तो राजनीति को कौन नैतिक संरक्षण देगा? हम ऐसे चरित्रहीन एवं अपराधी तत्वों को जिम्मेदारी के पद देकर कैसे स्वस्थ राजनीति मूल्यों को स्थापित करेंगे? कैसे आम जनता के विश्वास पर खरे उतरेंगे? इस तरह अपराधी तत्वों को महिमामंडित करने के बाद ममता के दावों एवं लम्बे संघर्षों की क्या विश्वसनीयता धूमिल नहीं हो जायेगी? केवल सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) शेख को छह साल के लिए पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा कर अपनी पार्टी की अपराध-छवि को ढक नहीं सकती।ममता सरकार और बंगाल पुलिस कुछ भी दावा करे, इसमें संदेह नहीं कि उसने आपराधिक चरित्र वाले शाहजहां शेख का बचाव करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। जब कोई सरकार किसी कुख्यात व्यक्ति का बचाव करने में हिचक दिखाने से भी इन्कार कर दे तो भला इसे राजनीतिक निर्लज्जता के अलावा और क्या कहा जा सकता है? ममता सरकार के रवैये को देखते हुए यह अनिवार्य हो गया था कि ईडी पर हमले के साथ संदेशखाली की अन्य शर्मनाक घटनाओं के आरोपी को सख्त से सख्त सजा मिले। इस तरह की आपराधिक राजनीति को प्रश्रय देने वाले तृणमूल कांग्रेस को भी उसकी जमीन दिखा देनी चाहिए। अपराधी तत्वों को संरक्षण एवं उच्च पदों पर स्थापित करना-ये गंभीर मसले हैं, जिन पर राजनीति में गहन बहस हो, राजनीति के शुद्धिकरण का सार्थक प्रयास हो, यह नया भारत - सशक्त भारत की प्राथमिकताएं होनी ही चाहिए।

क्या उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी कांग्रेस का खेल बिगाड़ेगी बसपा?

आशीष तिवारी

बसपा सुप्रीमो मायावती ने एक बार फिर एलान किया कि वह बगैर गठबंधन के ही सियासी मैदान में उतरने जा रहीं हैं। दरअसल बीते कुछ दिनों से सियासी गलियारों में चर्चाएं इस बात की हो रही थीं कि मायावती समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के गठबंधन समूह ढ्ढ.ह्ल.ष्ठ.ढ्ढ गठबंधन का हिस्सा हो जाएंगी। क्योंकि कांग्रेस ने अपने बड़े नेताओं के माध्यम से संपर्क कर गठबंधन में आने की बात की थी। अब जब मायावती ने एक बार फिर खुलकर किसी भी राजनीतिक दल से गठबंधन न करने की बात की है, तो माना जा रहा है कि क्या मायावती गठबंधन समूह ढ्ढ.ह्ल.ष्ठ.ढ्ढ का खेल बिगाड़ने वाली हैं। क्योंकि सपा बसपा और कांग्रेस के सियासी गठबंधन को चुनावी नजरिए से बेहद मजबूत माना जा रहा था। फिलहाल अब इस फैसले के बाद मायावती जल्द ही अपने प्रत्याशियों की घोषणा कर सकती हैं। इसके लिए बाकायदा पार्टी आकाश आनंद की अगुवाई में एक महत्वपूर्ण बैठक करने वाली हैं। उत्तर प्रदेश में भाजपा को टक्कर देने के लिए ढ्ढ.ह्ल.ष्ठ.ढ्ढ गठबंधन समूह में बहुजन समाज पार्टी के भी शामिल होने के कयास लगाए जा रहे थे। चर्चा इस बात की थी कि अगर बहुजन समाज पार्टी इस समूह में शामिल हो जाती है, तो मुस्लिम और दलितों के बड़े बिखराव को रोका जा सकता है। सियासी जानकार भी मानते हैं कि सपा, बसपा और कांग्रेस का गठबंधन होता तो निश्चित तौर पर उत्तर प्रदेश में सियासत की एक दूसरी तस्वीर सामने आ सकती है। वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक बृजेंद्र शुक्ला कहते हैं कि दरअसल यह कयास इसलिए भी लगाए जा रहे थे कि बहुजन समाज पार्टी के 2014 और 2019 के वोट प्रतिशत क्रमशः शून्य और दस सीटों पर तकरीबन बराबर रहे थे। ऐसे में अगर सपा बसपा और कांग्रेस मिलकर सियासी मैदान में उतरती, तो बसपा के 19 फीसदी वोटों से कई सियासी समीकरण साधे जा सकते थे। सियासी जानकारों का मानना है कि बहुजन समाज पार्टी जिस तरह मुस्लिम और दलित प्रत्याशियों पर दांव लगा रही है, उससे कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की सियासी गणित बिगड़ सकती है। राजनीतिक विश्लेषक नसरुद्दीन सिद्दीकी का मानना है कि बसपा ने मुस्लिम और दलित समुदाय समेत पिछड़ों पर पूरा फोकस करते हुए टिकट बंटवारे की तैयारी की है। पिछले कुछ चुनाव में भी इसी जातिगत समीकरण को साधते हुए बसपा ने अपने प्रत्याशी मैदान में उतारे थे। ऐसे में इस लोकसभा चुनाव में भी अगर बसपा इस तरह प्रत्याशी मैदान में उतारती है, तो समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के मतदाताओं में सेंधमारी हो सकती है। जो कि सियासी नजरिए से समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के लिए मुफीद नहीं है। यही वजह है कि कांग्रेस इन परिस्थितियों को भांपते हुए बसपा के साथ कदमताल करने को तैयार थी। हालांकि सूत्रों के मुताबिक बहुजन समाज पार्टी से समझौते को लेकर समाजवादी पार्टी पक्षधर नहीं थी। समाजवादी पार्टी से जुड़े नेताओं ने इस बात का जिक्र भी किया कि बहुजन समाज पार्टी के साथ समझौते में उसका वोट ट्रांसफर नहीं हो सकता। पार्टी के नेताओं ने 2019 के चुनाव में इसका उदाहरण बताते हुए अंदरूनी विरोध भी किया था। समाजवादी पार्टी से जुड़े एक वरिष्ठ नेता बताते हैं कि 2019 के लोकसभा चुनाव में जब सपा और बसपा का गठबंधन हुआ, तो समाजवादी पार्टी का वोट बहुजन समाज पार्टी को गया। नतीजतन 2014 की तुलना में 2019 में कम सीटों पर लड़ने के बाद भी बसपा शून्य से 10 सीटों पर आ गई। जबकि समाजवादी पार्टी को उसका कोई फायदा नहीं हुआ। सूत्रों के मुताबिक ऐसी तमाम दलीलों के बाद भी कांग्रेस पार्टी के नेता बहुजन समाज पार्टी के साथ गठबंधन को लेकर लगातार प्रयासरत थे। कांग्रेस पार्टी से जुड़े वरिष्ठ नेता बताते हैं कि दरअसल पार्टी मुस्लिम वोटों के बिखराव को लेकर कोई रिस्क नहीं लेना चाहती थी। यही वजह थी कि वह बहुजन समाज पार्टी से गठबंधन के लिए संपर्क में थी।

पढ़ाई में अव्वल भरतनाट्यम में एक्सपर्ट

मिस वर्ल्ड 2024 में भारत की दावेदार सिनी शेट्टी

खूबसूरती की दुनिया में अलग मुकाम रखने वाली भारत एक बार एक खूबसूरत समारोह का गवाह बनने जा रहा है. ये समारोह है मिस वर्ल्ड कॉन्टेस्ट का आयोजन, जो 28 साल के लंबे अंतराल के बाद भारत में होने जा रहा है. इस समारोह में भारत का झंडा बुलंद करेंगी सिनी शेट्टी, जो पहले ही मिस इंडिया वर्ल्ड का खिताब जीत कर यहां तक पहुंची हैं. वैसे मिस वर्ल्ड की प्रतियोगिता में ऐसी कई हसीनाओं के नाम शामिल हैं, जो टैलेंटेड भी हैं और खूबसूरत भी. जिसमें ऐश्वर्या राय, प्रियंका चोपड़ा जैसी एक्ट्रेस शुमार हैं तो कुछ ही समय पहले मानुषी छिल्लर ये ताज देश में लेकर आई हैं. अब क्या सिनी शेट्टी भारत की उम्मीदों पर खरी उतरेंगी. चंद ही घंटे बाद इस सवाल का जवाब मिल जाएगा. फिलहाल आपको बताते हैं सिनी शेट्टी से जुड़े की दिलचस्प फैक्ट.

सिनी शेट्टी कर्नाटक को बिलॉन्ग करती हैं. हालांकि उनकी बर्थप्लेस मुंबई है. सिनी शेट्टी का इन दो शहरों से ताल्लुक तो है, इसके अलावा वो शाही परिवार का भी हिस्सा हैं. अपने ननिहाल की तरफ से वो शाही परिवार का हिस्सा हैं जबकि उनके दादा फ्रीडम फाइटर रहे हैं. सिनी शेट्टी में दोनों ही घराने की झलक नजर आती है. वो राजसी नजाकत की भी मालकिन हैं और कॉन्फिडेंस भी.

पढ़ाई लिखाई में भी सिनी शेट्टी किसी से कम नहीं हैं. वो फाइनेंस और अकाउंटेंसी में ग्रेजुएट हैं. 21 साल की उम्र में मिस इंडिया का खिताब जीतने वाली सिनी शेट्टी इससे पहले चार्टेड अकाउंटेंसी का कोर्स कर रही थीं. पढ़ाई लिखाई में अव्वल रहने वाली सिनी शेट्टी दूसरी विधाओं में महारत रखती हैं. वो भरतनाट्यम की बेहतरीन डांसर हैं. उन्होंने सिर्फ 14 साल की उम्र में आरंगेत्रम हासिल कर लिया था. उन्होंने ब्यूटी पीजेंट कॉम्पिटिशन में भरतनाट्यम और बॉलीवुड डांस परफॉर्म किया था.

सिनी शेट्टी के इस हुनर की पहचान उनकी टीचर ने की थी. 16 साल की उम्र में जब सिनी शेट्टी डांस सीखने जाती थीं. उस वक्त एक बार उनकी टीचर ने उनकी एंट्री पर कहा था कि लो आ गई हमारी क्लास की मिस इंडिया. उनकी कही ये बात अब सच हो गई. मिस वर्ल्ड कॉन्टेस्ट तक पहुंची सिनी शेट्टी देश की पूर्व मिस वर्ल्ड प्रियंका चोपड़ा से इंस्पायर हैं और उन्हें ही अपनी प्रेरणा मानती हैं. सिनी शेट्टी का कहना है कि वो खुलकर बोलना प्रियंका चोपड़ा को देखकर ही सीखी हैं.

जब करिश्मा ने लगाया था पूर्व पति संजय पर बेहद गंभीर आरोप

करिश्मा कपूर के पिता और दिग्गज अभिनेता रणधीर कपूर ने अपनी बेटी के तलाक के बाद अपने पूर्व दामाद संजय कपूर को थर्ड क्लास आदमी कहा था। सानिया कपूर के साथ करिश्मा कपूर की शादी किसी बुरे सपने से कम नहीं थी क्योंकि अभिनेत्री ने कथित तौर पर आरोप लगाया था कि वह उन्हें अपने दोस्तों के साथ सोने के लिए मजबूर करते थे और उन्हें नीलाम करने की भी कोशिश की थी। 2003 में संजय से शादी करने वाली करिश्मा ने अपने बच्चों की कस्टडी के लिए कानूनी लड़ाई के साथ तलाक की याचिका दायर की थी, याचिका में करिश्मा ने दावा किया था कि संजय ने अपने हनीमून के दौरान उन्हें नीलाम करने की कोशिश की थी और उनकी कीमत भी अपने बच्चों में से एक के लिए तय की थी। दोस्तों के साथ सोने के लिए, और जब उसने मना कर दिया तो उसने उसके साथ शारीरिक उत्पीड़न किया। करिश्मा कपूर ने कथित तौर पर यह भी कहा था कि कैसे अपनी गर्भावस्था के दौरान वह अपनी सास द्वारा दिए गए आउटफिट में से एक में फिट नहीं हो पाती थीं, जहां संजय ने अपनी मां से उन्हें थप्पड़ मारने का आग्रह किया था। अभिनेत्री ने घरेलू हिंसा का सामना करने के बारे में खुलासा किया और कथित तौर पर अदालत में इस भयावह घटना के बारे में बताया। करिश्मा ने घरेलू हिंसा को लेकर संजय और उनकी मां के खिलाफ पुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई थी, खार के एक पुलिस अधिकारी ने इस खबर की पुष्टि की थी और अपने बयान में कहा था, हमने मामला दर्ज कर लिया है और आरोपों के आधार पर मामले की जांच करेंगे। हम आने वाले सप्ताह में संजय और उसकी माँ से पूछताछ करेंगे। ऐसा 2016 में हुआ था। करिश्मा एक ख़राब शादी में थीं और उनका परिवार उनके साथ था और उन्होंने उन्हें इस दुविधा से बाहर निकाला और खुद का सबसे अच्छा संस्करण बनाया। करिश्मा 10 साल पहले अपने पूर्व पति संजय से अलग हो गई थीं। आज वह बेहद खुश और स्वस्थ्य हैं। अभिनेत्री ने अपने अभिनय करियर को भी पुनर्जीवित किया है और वह सारा अली खान के साथ मर्डर मुबारक में नजर आएंगी।

राम चरण की मां सुरेखा ने उद्यमी के रूप नई शुरुआत

राम चरण ने अपनी कुकिंग स्किल से किया सेलिब्रेट

जैसा कि दुनिया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाती है और हिंदू 8 मार्च, 2024 को गहरी भक्ति के साथ महा शिवरात्रि मनाते हैं, जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग उत्सव की भावना को अपना रहे हैं। इनमें मशहूर हस्तियां भी अपने जीवन में महिलाओं के प्रति प्रशंसा और कृतज्ञता व्यक्त करने में पीछे नहीं रहते हैं। इस शुभ और खुशी के अवसर पर प्रसिद्ध अभिनेता राम चरण ने दिल छू लेने वाले भाव के साथ अपनी मां सुरेखा के प्रति अपना प्यार और सराहना व्यक्त की। इस अवसर पर राम चरण ने रसोई की जिम्मेदारी संभाली और मुंह में पानी ला देने वाले व्यंजन तैयार करने के लिए अपने पाक कौशल का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने हाथों से और बहुत ही प्यार से स्वादिष्ट डोसा और स्वादिष्ट पनीर टिक्का बनाया, दिल छू लेने वाले क्षणों को वीडियो में कैद किया जो तेजी से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म वायरल हो रहा है।

राम चरण और उनकी मां सुरेखा के बीच साझा किया गया बंधन प्यार और स्नेह से झलकता है, जो अनगिनत प्रशंसकों के दिलों को मंत्रमुग्ध कर देता है। जब सुरेखा अपने बेटे को शेफ की टोपी पहने हुए देखती है तो उनकी खुशी और उत्साह उनके बीच के गहरे संबंध को दर्शाता है । इस पूरी रील और मां-बेटे के प्यार और बॉन्डिंग को राम चरण की पत्नी उपासना ने कैद कर लिया। उन्होंने रील शूट की और सोशल मीडिया पर पोस्ट की। मालूम हो कि उपासना ने अपनी सास सुरेखा के साथ मिलकर अथम्मा किचन की शुरुआत की थी और उन्होंने आज उन्हें शुभकामनाएं देते हुए पोस्ट किया, इस महिला दिवस पर मेरी सास 60 साल की उम्र में एक उद्यमी के रूप में अपनी शुरुआत कर रही हैं, कल्पना कीजिए कि हमारा देश कितना समृद्ध होगा यदि और अधिक अथम्मा और अम्मा उद्यमी बन जाएं!! इन अनमोल पारिवारिक क्षणों के बीच, राम चरण अपनी व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं के साथ अपने व्यक्तिगत प्रयासों को संतुलित करते हुए, अपनी कला के प्रति समर्पित रहते हैं। वर्तमान में प्रशंसित फिल्म निर्माता शंकर के निर्देशन में एक मनोरंजक राजनीतिक थ्रिलर गेम चेंजर के फिल्मांकन में डूबे हुए, राम चरण की दोहरी भूमिकाओं का चित्रण दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने का वादा करता है। सह-कलाकार कियारा आडवाणी और अंजलि के साथ उनकी ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री, थमन की मंत्रमुग्ध कर देने वाली धुनों के साथ, इस आगामी सिनेमाई तमाशे को लेकर प्रत्याशा को बढ़ा देती है।

इसके अलावा, राम चरण की सिनेमाई यात्रा की बात करे तो गेम चेंजर की चर्चा बनी हुई है, क्योंकि वह निर्देशक बुची बाबू सना द्वारा निर्देशित एक रोमांचक उद्यम हैं। ऐसी अफवाह है कि वे प्रशंसित रंगस्थलम जैसी वास्तविक जीवन की घटनाओं से प्रेरित होने वाली फिल्म में महान अभिनेत्री श्रीदेवी की बेटी, बॉलीवुड सुंदरी जान्हवी कपूर के साथ अभिनय करने के लिए तैयार, राम चरण कहानी कहने की सीमाओं को आगे बढ़ा रहे हैं।

संजय लीला भंसाली की हीरामंडी का पहला ट्रेडिशनल सॉन्ग 'सकल बन' ग्लोबल लेवल पर मिस वर्ल्ड 2024 के मंच पर होगा लॉन्च

संजय लीला भंसाली का पहला कदम वेब सीरीज की दुनिया में हीरामंडी के साथ ग्लोबल मंच पर लॉन्च होने वाला है । वेब शो हीरामंडी का पहला गाना जिसका टाइटल है सकल बन मिस वर्ल्ड 2024 के ग्लोबल स्टेज पर 9 मार्च को लॉन्च किया जाएगा । संजय लीला भंसाली की हीरामंडी का पहला ट्रेडिशनल सॉन्ग 'सकल बन' ग्लोबल लेवल पर मिस वर्ल्ड 2024 के मंच पर होगा लॉन्च संजय लीला भंसाली की आने वाली कोशिश हीरामंडी सभी के दिलों में म्यूजिक के लिए एक विजुअल और ऑडिटरी ट्रीट होने का वादा करती है। वेब सीरीज जिसके गाने का टाइटल सकल बन है, को 9 मार्च को मिस वर्ल्ड 2024 के मंच पर एक ग्रैंड ग्लोबल रिलीज मिलेगी। हीरामंडी का यह पहला ट्रैक है, जिसे भंसाली के नए म्यूजिक लेबल के टेल बनाया जाएगा। बता दें कि सकल बन एक ट्रेडिशनल सॉन्ग होगा जिसमें हीरामंडी की सभी लीड एक्ट्रेस जैसे मनीषा कोइराला, अदिति राव हैदरी, सोनाक्षी सिन्हा, शरमन सहगल, ऋचा चड्ढा और संजीदा शेख नजर आने वाली हैं। इसके अलावा, संजय लीला भंसाली अपनी मच अवेटेड मैग्नम ओपुस हीरामंडी के साथ एक बार फिर दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए तैयार हैं। एक दमदार टीज़र लॉन्च के बाद, फिल्म मेकर ने लीड एक्ट्रेसेस मनीषा कोइराला, अदिति राव हैदरी, सोनाक्षी सिन्हा, शर्मिन सहगल, ऋचा चड्ढा और संजीदा शेख के पहले सिंगल पोस्टर लॉन्च करके वेब शो के उत्साह को बढ़ाया है। भंसाली म्यूजिक के जरिए, संजय लीला भंसाली कला की व्यक्तिगत व्याख्या की सीमाएं नए रूप में स्थापित करते हुए, जनता को एक यात्रा पर बुलाते हैं, जहां संगीत सिर्फ एक अक्सेसरी नहीं बल्कि एक रूह-जगाने वाली शक्ति है

दर्शकों को अपने वश में करने का दम रखती है माधवन -अजय देवगन की हॉरर-थ्रिलर शैतान

शैतान संकट में फंसे एक परिवार की कहानी है । कबीर (अजय देवगन) अपनी पत्नी ज्योति (ज्योतिका), बेटी जाह्नवी (जानकी बोदीवाला) और बेटे ध्रुव (अंगद राज) के साथ देहरादून में रहते हैं । वे वीकेंड के लिए अपने फार्महाउस की ओर जाते हैं और रास्ते में उनकी मुलाकात वनराज (आर माधवन) से होती है । वह परिवार से दोस्ती करता है और जाह्नवी को चतुराई से मिठाई खिलाता है । तुरंत, जाह्नवी वनराज के जादू में आ जाती है । फार्महाउस पहुंचने के कुछ समय बाद, कबीर और उसका परिवार वनराज को अपने दरवाजे पर पाते हैं । ज्योति को संदेह हुआ लेकिन वनराज ने उन्हें आश्वासन दिया कि उसे अपने मोबाइल फोन को चार्ज करने के लिए मदद की ज़रूरत है । जाह्नवी, जो अभी भी उसके जादू में है, उसे अपने सीक्रेट्स बता देती है । जब वनराज ज्यादा रुकने की कोशिश करता है, तो कबीर उसे बाहर निकालने की कोशिश करता है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि जाह्नवी हिंसक तरीके से उसे वनराज को फार्महाउस से बाहर निकालने से रोकती है । जाह्नवी को वनराज के सभी आदेशों का आँख मूँद कर पालन करते देख परिवार हैरान हो जाता है । वनराज जल्द ही अपने इरादे स्पष्ट कर देता है - वह चाहता है कि कबीर और ज्योति जाह्नवी को उसे दे दें । आगे क्या होता है यह पूरी फ़िल्म देखने के बाद पता चलता है ।

कैसी है शैतान

शैतान 2023 की गुजराती फिल्म, वश [कृष्णदेव याग्निक द्वारा लिखित और निर्देशित] की आधिकारिक हिंदी रीमेक है । रूपांतरित कहानी बेहतरीन है और काले जादू पर आधारित बाकी फिल्मों से अलग है । आमिल कीयान खान की रूपांतरित पटकथा बहुत बांधे रखने वाली है । अफसोस की बात है कि लेखक ढीले सिरों को ठीक से नहीं बांध पाते है। आमिल कीयान खान के डॉयलॉग्स सामान्य हैं और बहुत चुनिंदा वन-लाइनर्स प्रभाव डालते हैं। विकास बहल का निर्देशन अव्वल दर्जे का है । वह दर्शकों को बांधे रखते है, खासकर जब चीजें बदतर हो जाती हैं । कोई भी व्यक्ति परिवार की स्थिति से द्रवित हो जाता है और उनकी मदद करने से खुद को रोक नहीं पाता है। साथ ही, पूरी फिल्म में तनाव का स्तर बना रहता है और यह दर्शकों को बांधे रखने में भी मदद करता है। वहीं कमी की बात करें तो बहुत अधिक सिनेमाई स्वतंत्रताएं हैं । पात्रों को बेरहमी से घायल होते हुए देखना और फिर भी उन्हें न केवल जीवित रहते हुए बल्कि वापस लड़ते हुए देखना कुछ ज्यादा ही हो जाता है । क्लाईमेक्स की लड़ाई पहले से अनुमान लगाई जा सकती है । साथ ही, यह जानकर हैरानी होती है कि वनराज अपनी योजना को अंजाम दे रहा है और किसी को इसकी भनक तक नहीं लग रही है। आखिरी दृश्य दिलचस्प है लेकिन इसे बेहतर तरीके से लिखा जा सकता था ।

शैतान की शुरुआत एक भयानक क्रेडिट एनीमेशन से होती है जो मूड सेट करता है। परिचय शॉट सुंदर है और बहुत आर्गेनिक दिखता है। पागलपन तब शुरू होता है जब वनराज मासूमियत से अपना परिचय परिवार को देता है। पहले भाग में जो दो दृश्य उभरकर सामने आते हैं, वे हैं जाह्नवी का अपने भाई के साथ झूले पर हिंसक रूप से खेलना और पुलिस वाला दृश्य । इंटरमिशन एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आता है। सेकेंड हाफ़ में, पागलपन जारी रहता है क्योंकि वनराज अपना खेल आगे बढ़ाता है जबकि परिवार भी उसे मात देने की कोशिश करता है। कमियों के बावजूद, फ़िल्म का अंत लोगों को सीट से चिपकने पर मजबूर कर देगा ।

अभिनय

शैतान, आर माधवन और जानकी बोदीवाला की फ़िल्म है । आर माधवन ने अपनी जहरीली अदाओं से महफिल लूट ली । उनमें वह मासूमियत है और इसलिए, यह तब विश्वसनीय लगता है जब कबीर और उसके परिवार को शुरू में उस पर संदेह नहीं होता है । दूसरे भाग में, वह अपने अभिनय को कई पायदान ऊपर ले जाते हैं । जानकी बोदीवाला अपने किरदार में पूरी तरह समा जाती हैं । निःसंदेह, उनका एक त्रुटिहीन प्रदर्शन है । अजय देवगन भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं और शानदार अभिनय करते हैं। क्लाईमेक्स में उनका तालियों और सीटियों से स्वागत होना निश्चित है। ज्योतिका सक्षम समर्थन देती है और स्वाभाविक प्रदर्शन करती है। यही बात अंगद राज पर भी लागू होती है। शुरुआती दृश्यों में वह काफी मजाकिया हैं।

संगीत और अन्य तकनीकी पहलू

अमित त्रिवेदी का संगीत ठीक है और फिल्म के सभी गाने - शीर्षक ट्रैक, %ऐसा मैं शैतान% और %खुशियां बटोर लो% - थीम के अनुरूप हैं। अमित त्रिवेदी का बैकग्राउंड स्कोर फिल्म की यूएसपी में से एक है।

सुधाकर रेड्डी यक्कन्ति की सिनेमैटोग्राफी सराहनीय है, यह देखते हुए कि यह सिर्फ एक घर में सेट है। स्विंग सीक्वेंस में कैमरावर्क असाधारण है। गरिमा माथुर का प्रोडक्शन डिजाइन आकर्षक है। राधिका मेहरा की वेशभूषा समृद्ध है। विक्रम मोर और आर पी यादव का एक्शन थोड़ा परेशान करने वाला है लेकिन कहानी के लिए उपयुक्त है। संदीप फ्रांसिस का संपादन अच्छा है, लेकिन दूसरे भाग में थोड़ा धीमा हो सकता था।

क्यों देखें शैतान फ़िल्म

कुल मिलाकर, शैतान एक ज़बरदस्त थ्रिलर है जिसमें शानदार अभिनय और तालियां बजाने योग्य क्लाईमेक्स है जो आपको बांधे रखता है । बॉक्स ऑफिस पर, फिल्म अच्छी तरह से प्राप्त ट्रेलर, प्रचार और महाशिवरात्रि के कारण आंशिक छुट्टी के कारण अच्छी शुरुआत के लिए तैयार है । फिल्म के पक्ष में एक बात यह भी जाएगी कि लंबे समय के बाद अजय देवगन जैसा ए-लिस्टर इस जॉनर में नजर आएगा ।

अजय की सिंघम अगेन में अर्जुन के खूंख़ार किरदार का नाम है डेंजर लंका

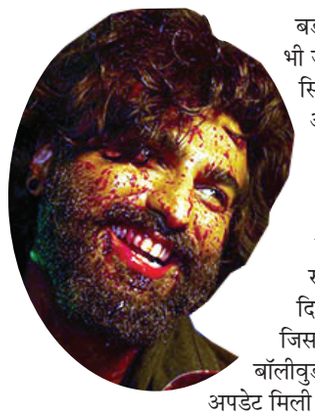

बड़ी फ्रेंचाइज़ी में से एक है । सिंघम के हर पार्ट के साथ यह फ्रेंचाइज़ी और भी ज्यादा बड़ी होती जा रही है । सिंघम (2011), सिंघम रिटर्न्स (2014), सिम्बा (2018) और सूर्यवंशी (2021) की ब्लॉकबस्टर सफलता के बाद अब रोहित शेट्टी लेकर आ रहे हैं सिंघम अगेन जिसमें अजय देवगन तो लीड रोल में नज़र आने वाले हैं ही साथ ही इस बार और भी कई नए ऐक्टर्स की भी नई एंट्री हुई है और उनमे शामिल हैं टाइगर श्रॉफ, दीपिका पादुकोण और अर्जुन कपूर । टाइगर श्रॉफ और दीपिका पादुकोण जहां कॉप अवतार में नज़र आने वाले हैं वहीं अर्जुन कपूर ख़तरनाक विलेन के रूप में सिंघम अगेन में अजय देवगन से मुक़ाबला करेंगे । मेकर्स ने कुछ दिन पहले सिंघम अगेन से अर्जुन का ख़तरनाक फ़र्स्ट लुक शेयर किया था जिसमें वह कुटिल मुस्कान के साथ खून से लथपथ नज़र आ रहे हैं । और अब बॉलीवुड हंगामा को सिंघम अगेन में अर्जुन के किरदार के बारें में एक और लेटेस्ट अपडेट मिली है । बॉलीवुड हंगामा को अब पता चला है कि अर्जुन के किरदार को एक अच्छा और शातिर नाम दिया गया है । एक सूत्र ने हमें बताया, सिंघम अगेन में उनका नाम डेंजर लंका है । इस नाम के पीछे काफी सोच-विचार किया गया है, जो दर्शकों को फिल्म देखने के बाद पता चलेगा । सूत्र ने कहा, अर्जुन ने फिल्म के लिए जी तोड़ मेहनत की है और यह उनके फ़र्स्ट लुक से भी साफ़-साफ़ देखने को मिल रहा है । निर्माताओं द्वारा उनके खून से लथपथ लुक के अनावरण से स्पष्ट है । रोहित शेट्टी और उनकी टीम ने उनके किरदार को इस तरह से डिजाइन किया है कि डेंजर लंका दर्शकों पर एक अमिट छाप छोड़ेगा । अपने लुक के आउट होने के एक हफ्ते बाद, अर्जुन ने एक बयान जारी किया, मैं बहुत खुश हूं कि रोहित शेट्टी जैसे दिग्गज फिल्म निर्माता ने देखा कि मुझमें उनकी बड़ी फ्रेंचाइज़ी फ़िल्म सिंघम अगेन में खलनायक की भूमिका निभाने की क्षमता है, जिसमें इतने सारे कलाकार हैं ! मैं जानता हूं कि मैंने इसमें अपना सब कुछ लगा दिया है और मैं यह देखने के लिए उत्सुक हूं कि जब फिल्म रिलीज होगी तो लोग मुझ पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे। इसके अलावा उन्होंने कहा, मैंने इशकजादे (2012), औरंगजेब (2013) जैसे नकारात्मक किरदार निभाकर इंडस्ट्री में अपना करियर शुरू किया और इतने सालों के बाद, मैं यहां सिंघम अगेन में एक खलनायक की भूमिका निभा रहा हूं! जबकि उस समय आदित्य चोपड़ा ने मुझमें ऐसे किरदार निभाने की क्षमता देखी थी, जिनमें खामियां थीं, अब, मैं इस विश्वास के लिए रोहित शेट्टी का आभारी हूं कि मैं उनकी महत्वाकांक्षी और बहुचर्चित कॉप यूनिवर्स फिल्म में एक बेहतरीन खलनायक की भूमिका निभा सकता हूं!

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

गांधी परिवार के करीबी सुरेश पचौरी भाजपा में शामिल

भोपाल। मध्य प्रदेश में लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस को जोरदार झटका लगा है। यहां कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी ने भाजपा का दामन थाम लिया है। उनके साथ पूर्व सांसद गजेंद्र सिंह राजूखेड़ी भी भाजपा में शामिल हो गये हैं। प्रदेश में देश की सबसे पुरानी पार्टी को ये झटका राहुल गांधी की भारत जोड़ों न्याय यात्रा के गुजरने के बाद लगा है। भाजपा के प्रदेश इकाई के मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल की ओर से उक्त जानकारी दी गई है। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी की बात करें तो उन्हें गांधी परिवार का करीबी बताया जाता है। पचौरी केंद्रीय रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री के पद पर भी रह चुके हैं। वे कांग्रेस के चार बार राज्यसभा सदस्य भी रहे। भाजपा में शामिल होने पर पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस उन सिद्धांतों और नीतियों से अलग हो चुकी है जिसके लिए वह पहले जानी जाती थी। उसने खुद को जनता से अलग कर लिया है और रिश्ता कायम करने में सफल नहीं हो पाई है।

पश्चिम बंगाल के भाजपा सांसद कुनार हेम्ब्रम ने दिया इस्तीफा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के झाड़ग्राम से भाजपा सांसद कुंअर हेम्ब्रम ने शनिवार को कहा कि उन्होंने लोकसभा और अपनी पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। पत्रकारों से बातचीत में हेम्ब्रम ने कहा कि उन्होंने निजी कारणों से यह फैसला लिया है। प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता समिक भट्टाचार्य ने कहा, हेंब्रम ने कुछ दिन पहले पार्टी को अपने फैसले के बारे में सूचित किया था। इस घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए टीएमसी ने कहा कि उन्होंने हार को भांपते हुए इस्तीफा दे दिया है। टीएमसी सांसद शांतनु सेन ने कहा, उन्हें पता है कि बीजेपी सीट हारने वाली है। इसलिए उन्होंने पद छोड़ने का फैसला किया है। बीजेपी छोड़ने के बाद कहा कि हेम्ब्रम ने कहा कि वह राजनीति में बने रहना नहीं चाहते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें नहीं पता कि उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया है या नहीं और यह छोड़ने का अच्छा समय है क्योंकि किसी और को मौका मिलेगा।

लोकसभा चुनाव में गठबंधन नहीं होगा : मायावती

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने ऐलान कर दिया है कि उनकी पार्टी अपने दम पर लोकसभा चुनाव लड़ रही है। उन्होंने कहा कि बीएसपी देश में लोकसभा का आमचुनाव अकेले अपने बलबूते पर पूरी तैयारी व दमदारी के साथ लड़ रही है। ऐसे में चुनावी गठबंधन या तीसरा मोर्चा आदि बनाने की अफवाह फैलाना यह घोर फेक व गलत न्यूज़। मीडिया ऐसी शरारतपूर्ण खबरें देकर अपनी विश्वसनीयता न खोए। लोग भी सावधान रहें। ख़ासकर यूपी में बीएसपी की काफी मज़बूती के साथ अकेले चुनाव लड़ने के कारण विरोधी लोग काफी बैचेन लगते हैं। इसीलिए ये आए दिन किस्म-किस्म की अफवाहें फैलाकर लोगों को गुमराह करने का प्रयास करते रहते हैं। किन्तु बहुजन समाज के हित में बीएसपी का अकेले चुनाव लड़ने का फैसला अटल। मायावती ने एक बार फिर साफ कर दिया है कि लोकसभा चुनाव में किसी भी पार्टी के साथ कोई गठबंधन नहीं होगा।

लालू के करीबी सुभाष यादव के ठिकानों पर ईडी की छापेमारी

पटना। राजद प्रमुख लालू यादव के एक और करीबी जांच एजेंसी के रडार पर चढ़े हैं। राजद सुप्रीमो के करीबी व लोकसभा के प्रत्याशी रह चुके सुभाष यादव के कई ठिकानों पर ईडी ने रेड की है। शनिवार को ईडी ने पटना में सुभाष यादव के कई ठिकानों पर छापेमारी की है। बालू कारोबार से जुड़े मामले में हो रही कार्रवाई की बात सामने आयी है। दानापुर के तकियापर समेत कई अन्य जगहों पर ये छापेमारी चल रही है। राजद नेता सुभाष यादव के कई ठिकानों पर ईडी ने शनिवार की सुबह से कार्रवाई शुरू की है। सुभाष यादव के दानापुर के तकियापर समेत कई अन्य जगहों पर छापेमारी की गयी है। इस रेड से जुड़ी अधिकारिक पुष्टि अभी ईडी की ओर से नहीं की गयी है। बता दें कि सुभाष यादव के खिलाफ पूर्व में भी जांच एजेंसियों ने कार्रवाई की थी। सुभाष यादव को राजद ने झारखंड के चतरा से लोकसभा चुनाव 2019 में प्रत्याशी बनाया था। सुभाष यादव चुनाव हार गए थे।

हिमाचल कांग्रेस का संकट और बढ़ा, 11 विधायक पहुंचे उत्तराखंड

शिमला। क्या हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस सरकार पर संकट के बादल अभी भी मंडरा रहे हैं। दरअसल, यह बात इसलिए कही जा रही है क्योंकि प्रदेश के छह बागियों सहित ग्यारह विधायक शनिवार को बीजेपी शासित राज्य उत्तराखंड पहुंचे हैं जिसके बाद सियासत एक बार फिर गरमा गई है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, शनिवार को हरियाणा की नंबर प्लेट वाली एक बस ऋषिकेश के ताज होटल पहुंची जिसमें में छह बागी और तीन निर्दलीय विधायकों सहित 11 विधायक नजर आए। बस की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये थे। यहां चर्चा कर दें कि कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने कुछ दिन पहले हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू को दिल्ली तलब किया था। खबरों की मानें तो सुक्खू राजनीतिक हालात पर रिपोर्ट पेश करने, के साथ-साथ लोकसभा चुनाव पर चर्चा करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली गए थे।

पीएम ने ईटानगर में सेला टनल समेत कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया

हमने पूर्वोत्तर में पांच साल में जो किया, उसे करने में कांग्रेस को 20 साल लगते: मोदी

ईटानगर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को अरुणाचल प्रदेश के दौरे पर थे। पीएम ने ईटानगर में सेला टनल समेत कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। इसके बाद एक सभा को संबोधित किया। पीएम ने यहां पर परिवारवाद पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि आपके बच्चे किस हाल में हैं इसकी परवाह इंडिया गठबंधन वालों ने कभी नहीं की और न ही कभी करेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि उनकी सरकार ने पिछले पांच साल में पूर्वोत्तर भारत में जिस तरह का काम किया है, उसे करने में कांग्रेस को 20 साल लग जाते।

लेकिन, जब तक हर व्यक्ति का घर, मुफ्त राशन, शुद्ध पीने का पानी, बिजली, टॉयलेट, गैस कनेक्शन मुफ्त इलाज, इंटरनेट कनेक्शन न पहुंचे तब तक मोदी चैन से नहीं बैठ सकता। आज जब यह मोदी के परिवार पर सवाल उठाते हैं। आज पूरा देश कह रहा है कि मैं हूं मोदी का परिवार। जो आपका सपना है वह मोदी का संकल्प है। नॉर्थ ईस्ट के विकास पर हमने जितना निवेश पिछले 5 वर्ष में किया है वह पहले की कांग्रेस की सरकार के कार्य से करीब 4 गुणा ज़्यादा है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से लेकर 2014 तक पूर्वोत्तर में 10 हजार किमी नेशनल हाइवे बनाए गए थे। जबकि बीते 10 वर्षों में ही 6 हजार किमी से अधिक नेशनल हाइवे बनाए गए हैं। जितना काम 7 दशक में हुआ, उतना हमने 1 दशस में करीब करीब कर दिया है।

जो धन हमने 5 साल में लगाया इतना ही काम करने के लिए कांग्रेस को 20 साल लग जाते थे। नॉर्थ ईस्ट के विकास के लिए हमारा विज़न अस्ट लक्ष्मी का रहा है। साउथ एशिया और ईस्ट एशिया के साथ भारत के ट्रेड, टूरिज्म और दूसरे रिश्ते की एक एक मज़बूत कड़ी, यह हमारा नॉर्थ ईस्ट बनने जा रहा है। आज भी यहां एक साथ 55,000 करोड़ रुपए से अधिक के परियोजनाओं का लोकार्पण या शिलान्यास हुआ है। उन्होंने कहा कि मोदी

विकसित भारत के निर्माण के लिए एक-एक ईंट जोड़ युवाओं के बेहतर भविष्य के लिए काम कर रहा है।

भाजपा सरकार के इन प्रयासों के बीच कांग्रेस और इंडिया गठबंधन क्या कर रहे हैं यह आपको पता है। अतीत में जब हमारे बॉर्डर पर आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना चाहिए था तब कांग्रेस की सरकारें घोटाले करने में व्यस्त थी। कांग्रेस हमारे सीमा के गांवो को अव्यवस्थित रखकर देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ कर रही थी। अपनी ही सेना को कमजोर रखना, अपने ही लोगों को सुविधा और समृद्धि से वंचित रखना ही कांग्रेस के कार्य करने का तरीका है। यही उनकी नीति है, यही उनकी रीति है।

पीएम ने कहा कि मोदी की गारंटी तो आप सुन रहे हैं, लेकिन इसका मतलब क्या होता यह आप जब अरुणाचल प्रदेश आएंगे तो आपको साक्षात दिखेगा कि मोदी की गारंटी कैसे काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आज विकास के अनेक कामों में नॉर्थ ईस्ट, हमारा अरुणाचल पूरे देश में टॉप कर रहा है। आज जैसे सुरज की किरणें यहां पहले आती हैं, वैसे ही विकास के काम भी यहां सबसे पहले होने लगे हैं। मोदी ने कहा कि 2019 में मुझे सेला टनल का शिलान्यास करने का अवसर मिला था। आज इसका लोकार्पण हुआ है। तो यह पक्की गारंटी है या नहीं है। 2019 में ही डोनी पोलो एयरपोर्ट का भी मैंने शिलान्यास किया था। आज ये एयरपोर्ट शानदार सेवाएं दे रहे हैं।

कार्यक्रम के दौरान, प्रधान मंत्री ने उत्तर पूर्व के लिए एक नई औद्योगिक विकास योजना, उन्नति (उत्तर पूर्व परिवर्तनकारी औद्योगिकीकरण योजना) का शुभारंभ किया। यह योजना उत्तर पूर्व में औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करेगी, नए निवेश को आकर्षित करेगी, नई विनिर्माण और सेवा इकाइयों को स्थापित करने में मदद करेगी और पूर्वोत्तर राज्यों में रोजगार को बढ़ावा देगी। यह योजना रु. 10,000 करोड़, पूरी तरह से भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित है और सभी 8 उत्तर पूर्वी राज्यों को कवर करता है।

यह योजना अनुमोदित इकाइयों को पूंजी निवेश, ब्याज छूट और विनिर्माण और सेवाओं से जुड़े प्रोत्साहन के लिए प्रोत्साहन भी प्रदान करेगी। पात्र इकाइयों के आसान एवं पारदर्शी पंजीकरण के लिए एक पोर्टल भी शुरू किया जा रहा है। उन्नति औद्योगिक विकास को उत्प्रेरित करने और उत्तर पूर्व क्षेत्र के आर्थिक विकास में सहायता करेगी।

सेला सुरंग की विशेषताएं- लगभग 825 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित सेला सुरंग परियोजना एक इंजीनियरिंग चमत्कार है। यह अरुणाचल प्रदेश में बालीपारा-चारिद्वार-तवांग रोड पर सेला दर्रे के पार तवांग को हर मौसम में कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। इसका निर्माण नई ऑस्ट्रियाई टनलिंग पद्धति का उपयोग करके किया गया है और इसमें उच्चतम मानकों की सुरक्षा विशेषताएं शामिल हैं। यह परियोजना न केवल क्षेत्र में तेज़ और अधिक कुशल परिवहन मार्ग प्रदान करेगी बल्कि देश के लिए रणनीतिक महत्व की है। प्रधानमंत्री ने अरुणाचल प्रदेश में 41,000 करोड़ से अधिक की कई विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। पीएम मोदी अरुणाचल प्रदेश के लोअर दिबांग वैली जिले में दिबांग बहुउद्देशीय जलविद्युत परियोजना की आधारशिला रखेंगे. 31,875 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से बनने वाला यह देश का सबसे ऊंचा बांध ढांचा होगा। यह बिजली पैदा करेगा, बाढ़ नियंत्रण में मदद करेगा।

सत्ता में आने पर कांग्रेस कराएगी जातिगत जनगणना और आर्थिक मैपिंग

हम 50 प्रतिशत की आरक्षण सीमा को उखाड़ कर फेंक देंगे: राहुल

गांधीनगर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक बार फिर पूरे देश में जातिगत जनगणना कराने का वादा करते हुए बड़ी घोषणा की है। राहुल ने कहा है कि जातिगत गिनती, आर्थिक मैपिंग, जिसके आधार पर हम 50 प्रतिशत की आरक्षण सीमा को उखाड़ कर फेंक देंगे। लोकसभा चुनाव 2024 में अब ज्यादा समय नहीं है और ऐसे में राहुल की इस बड़ी घोषणा को अहम माना जा रहा है।

एक्स पर एक पोस्ट में राहुल गांधी ने कहा, क्या हमने कभी सोचा है कि गरीब कौन हैं? कितने हैं और किस स्थिति में है? क्या इन सभी की गिनती ज़रूरी नहीं? बिहार में हुई जातिगत गिनती से पता चला कि गरीब आबादी के 88 प्रतिशत लोग दलित, आदिवासी, पिछड़े और अल्पसंख्यक समाज से आते हैं। बिहार से आए आंकड़े देश की असली तस्वीर की एक छोटी सी झलक मात्र हैं, हमें अंदाज़ा तक नहीं है कि देश की गरीब आबादी किस हाल में जी रही है। इसीलिए हम दो ऐतिहासिक कदम उठाने जा रहे हैं - जातिगत गिनती, आर्थिक मैपिंग, जिसके आधार पर हम 50 प्रतिशत की आरक्षण सीमा को उखाड़ कर फेंक देंगे।

राहुल ने आगे कहा, यह कदम देश का एक्स-रे कर सभी को सही आरक्षण, हक़ और हिस्सेदारी दिलाएगा। इससे न सिर्फ गरीब के लिए सही नीतियां और योजनाएं बनाई जा सकेंगी बल्कि उन्हें पढ़ाई, कमाई और दवाई के संघर्ष से उबार कर विकास की मुख्यधारा से जोड़ा भी जा सकेगा। इसलिए उठो, जागो और अपनी आवाज़ उठाओ, जातिगत गिनती तुम्हारा हक़ है और यही तुम्हें मुश्किलों के अंधेरों से निकाल कर उजालों की ओर ले जाएगी। गिनती करो हमारा नारा है, क्योंकि गिनती 'न्याय की पहली सीढ़ी' है।

बता दें कि राहुल गांधी की आज भारत जोड़ो न्याय यात्रा का 56वां दिन है। फिलहाल ये यात्रा गुजरात में है। राहुल इस पूरी यात्रा को दौरान

ओबीसी और जातिगत जनगणना का मुद्दा बार-बार उठा रहे हैं। बिहार में हुई जातिगत गिनती के बाद से कई विपक्षी नेता इसे पूरे देश में कराने की मांग कर रहे हैं।

यूपी को लेकर कांग्रेस ने गठित की दो बड़ी समिति

कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव से पहले उत्तर प्रदेश में राज्य से चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों पर फैसला करने के लिए शुक्रवार को दो समितियों का गठन किया। दो समितियों को राजनीतिक मामलों की समिति और प्रदेश चुनाव पैनल कहा जाता है। लोकसभा उम्मीदवारों पर निर्णय लेने के अलावा, समितियां कथित तौर पर प्रमुख मुद्दों पर पार्टी का रुख भी बताएंगी और अभियान की योजना भी बनाएंगी। राजनीतिक मामलों की समिति की अध्यक्षता यूपी के एआईसीसी प्रभारी अविनाश पांडे करेंगे। समिति में यूपी के प्रभारी एआईसीसी सचिवों के साथ यूपी के सभी फ्रंटल संगठनों के प्रमुखों सहित 40 सदस्य होंगे। सदस्यों में अजय राय, आराधना मिश्रा, प्रमोद तिवारी, मोहसिना किदवई, निर्मल खत्री, सलमान खुर्शीद, राजीव शुक्ला, पीएल पुनिया, वीरेंद्र चौधरी और राशिद अल्वी समेत अन्य शामिल हैं। प्रदेश (राज्य) चुनाव समिति की अध्यक्षता अजय राय करेंगे।

खेल
प्रमुख समाचार

भारत ने इंग्लैंड को पारी और 64 रन से हराया

धर्मशाला। भारत ने इंग्लैंड को धर्मशाला टेस्ट में तीसरे ही दिन पारी और 64 रनों से हराकर बड़ी जीत दर्ज की है। इस जीत के हीरो रविचंद्रन अश्विन रहे हैं। उन्होंने दोनों पारियों में नौ विकेट चटकाए। अश्विन ने अपने 100वें टेस्ट को यादगार बना दिया। इस जीत के साथ ही पांच मैचों की टेस्ट सीरीज पर भारत का 4-1 से कब्जा हो गया। तीसरे दिन लंच से थोड़ी देर पहले दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड की टीम दूसरे सेशन में ही सिमट गई। जैसे-तैसे इंग्लैंड ने दूसरी पारी में 195 रन बनाए। इंग्लैंड पहली पारी में भी 218 रनों पर ढेर हो गई थी। भारत ने रोहित शर्मा और शुभमन गिल के शतक की मदद से पहली पारी में 477 रन बनाए थे। टॉप के पांच बल्लेबाजों ने 50 से ज्यादा का स्कोर किया था। इसमें यशस्वी जायसवाल, सरफराज खान और डेब्यू करने वाले देवदत्त पडिक्कल का नाम शामिल है।

अनुभवी रविचंद्रन अश्विन ने तीसरे दिन लंच से पहले चार विकेट चटकाकर इंग्लैंड की कमर तोड़ दी। उन्होंने दोनों सलामी बल्लेबाज जैक क्राउली और बेन डकेट को पवेलियन का रास्ता दिखाया। 36 के स्कोर पर इंग्लैंड को ओली पोप के रूप में तीसरा झटका लगा, जिन्हें 19 के स्कोर पर अश्विन ने यशस्वी जायसवाल के हाथों कैच कराया। इसके बाद कुलदीप यादव ने जॉनी बेयरस्टो को पगबाधा आउट कर दिया, जो 31 गेंद पर 39 रन बनाकर खेल रहे हैं। लंच से पहले इंग्लैंड को पांचवां झटका अश्विन ने कप्तान बेन स्टोक्स को आउट कर दिया। अश्विन ने दोनों पारियों में नौ विकेट अपने नाम किए। इंग्लैंड की ओर से जो रूट ने सबसे अधिक 84 रन बनाए, लेकिन अपनी टीम को पारी से हार से बचाने में कामयाब नहीं हो सके। इंग्लैंड के 6 बल्लेबाज दहाई अंक तक भी नहीं पहुंच पाए। तीन बल्लेबाज शून्य के स्कोर पर आउट हुए हैं। अश्विन ने दूसरी पारी में 14 ओवर गेंदबाजी की और 77 रन देकर पांच विकेट चटकाए।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

अगले 10 वर्षों में रक्षा क्षेत्र में बड़ा निवेश कर रहे हैं: अडाणी ग्रुप

नयी दिल्ली। रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता हासिल करने के सरकार के प्रयास के अनुरूप अडाणी समूह अगले 10 वर्षों में रक्षा क्षेत्र में बड़ा निवेश करने जा रहा है। कंपनी के एक शीर्ष अधिकारी ने यह जानकारी दी। अडाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) आशीष राजवंशी ने बताया कि कंपनी 'मेक इन इंडिया' की दिशा में सरकार के प्रयासों का पूरक है। उन्होंने कहा कि वांछित लक्ष्य को साकार करने के लिए ''सभी को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने बृहस्पतिवार को 'डिफेंस समिट' में कहा, ''हम अगले 10 साल में रक्षा क्षेत्र में बड़ा निवेश करने जा रहे हैं।'' हालांकि, राजवंशी ने निवेश के बारे में विस्तार से नहीं बताया। एक बड़े कदम में, अडाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस ने पिछले महीने गोला-बारूद और मिसाइलों के निर्माण के लिए दो बड़े केंद्रों का उद्घाटन किया।

आईपीओ से पहले स्विगी की वैल्युएशन बढ़ी

नईदिल्ली। अमेरिका की एसेट मैनेजर बैरन कैपिटल ग्रुप ने आईपीओ-बाउंड फूड-डिलीवरी ऐप स्विगी के फेयर वैल्यू में वृद्धि की है, जिसके बाद 2022 में इसका मूल्यांकन 10.7 बिलियन डॉलर के मूल्यांकन से 13% बढ़कर 12.16 बिलियन डॉलर हो गया है। अमेरिकी प्रतिभूति और विनिमय आयोग की फाइलिंग में इसकी जानकारी मिली है। अमेरिका स्थित एसेट मैनेजर ने पहले जनवरी 2022 में 700 मिलियन के फंडिंग राउंड के दौरान स्विगी में निवेश किया था। 31 दिसंबर तक, एसेट मैनेजर के फंड के पास स्विगी की मूल कंपनी बंडल टेक्नोलॉजीज में 87.2 मिलियन की हिस्सेदारी थी, जो 74.4 मिलियन से 17% अधिक थी। 2022 में, स्विगी ने इनवेस्को के नेतृत्व में अपने सीरीज़ च राउंड में 700 मिलियन जुटाए। इस दौर में इसका मूल्यांकन दोगुना होकर 10.7 बिलियन डॉलर हो गया।

सिविल कंस्ट्रक्शन सेक्टर की कंपनी को मिला 800 करोड़ से ज्यादा का ऑर्डर

नईदिल्ली। कंस्ट्रक्शन की फील्ड में काम करने वाली कंपनी एचजी इंफ्रा इंजीनियरिंग को नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया से बड़ा ऑर्डर मिला है। इस बारे में शुक्रवार रात कंपनी ने शेयर बाजार को जानकारी दी है। मिली जानकारी के मुताबिक एनएचएआई के आंध्र प्रदेश में हाईवे प्रोजेक्ट्स की बोली जीत ली है। कंपनी को मिलने वाले इस ऑर्डर का साइज 800 करोड़ रुपये से ज्यादा का है। बता दें, कंपनी ने जनवरी में ही 700 करोड़ रुपये से ज्यादा का रेलवे प्रोजेक्ट हासिल किया है। जानकारी के अनुसार, एनएचएआई के हाईवे प्रोजेक्ट के लिए कंपनी एल 1 बिडर रही है, यानि कि कंपनी की बिड सबसे कम रही है। अथॉरिटी ने इस प्रोजेक्ट की लागत का अनुमान 943.99 करोड़ रुपये लगाया था, हालांकि कंपनी ने 862.11 करोड़ रुपये की बोली लगाई जो कि सबसे कम बोली साबित हुई।

देश के 6 बड़े शहरों में बढ़ेगी कार्यालय स्थल की मांग

नईदिल्ली। भारत के छह प्रमुख शहरों में कार्यालय स्थल की मांग इस साल अच्छी रहेगी। फिक्की-कोलियर्स की एक रिपोर्ट के अनुसार घरेलू और विदेशी कंपनियां अपने व्यवसाय विस्तार के लिए 2024 में 5-5.5 करोड़ वर्ग फुट क्षेत्र पट्टे पर ले सकती हैं। छह प्रमुख शहरों बेंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली-एनसीआर, हैदराबाद, मुंबई और पुणे में कार्यालय स्थल का कुल पट्टा 5.82 करोड़ वर्ग फुट था। उद्योग निकाय फिक्की और रियल एस्टेट सलाहकार कोलियर्स इंडिया ने इस सप्ताह की शुरुआत में अपनी रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट में कार्यालय मांग के लिए तीन परिदृश्य दिए गए हैं- आशावादी, यथार्थवादी और निराशावादी। रिपोर्ट के अनुसार यथार्थवादी स्थिति में, इन छह शहरों में इस साल श्रेणी-क के कार्यालय स्थल का कुल पट्टा 5-5.5 करोड़ वर्ग फुट होने का अनुमान है।

उत्साहजनक है जीडीपी में उच्च वृद्धि

अजीत रानाडे

वर्तमान वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही (अक्तूबर-दिसंबर 2023) में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 8.4 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है। यह सभी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक है। यह बहुत सुखद है कि महामारी के बाद लगातार तीन साल से अर्थव्यवस्था अच्छी दर के साथ बढ़ रही है। इससे सभी खुश हैं और स्टॉक बाजार ने भी उछाल के साथ वृद्धि का स्वागत किया है। शेयर बाजार में लगातार बढ़त निवेशकों की आशावादिता को दर्शाती है। सेमीकंडक्टर निर्माण में 15 अरब डॉलर के निवेश जैसी कई घोषणाओं से इंगित होता है कि अर्थव्यवस्था के भविष्य को लेकर उत्साह और विश्वास बना हुआ है। इस 8.4 प्रतिशत की वृद्धि को समझने के लिए गहनता से विचार करना आवश्यक है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए आवश्यक है क्योंकि इस उच्च वृद्धि ने सभी अनुमानों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। मसलन, रिजर्व बैंक के सर्वे में हाल ही में आकलन किया गया था कि इस वर्ष जीडीपी की वृद्धि छह से 6.9 प्रतिशत के बीच रह सकती है। दिसंबर की तिमाही के वृद्धि दर उस वार्षिक अनुमान से लगभग दो प्रतिशत अधिक हैं। अनुमान अक्सर गलत साबित होते हैं, पर उनमें इतना अधिक अंतर नहीं होता। अनुमान लगाने वाले अहम आंकड़ों के आधार पर हमेशा अर्थव्यवस्था पर नजर बनाये रखते हैं।

एक अन्य पहेली इसी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर और जोड़े गये कुल मूल्य (जीवीए) के बीच अंतर को लेकर है। जीवीए उत्पादित और बेचे गये वस्तुओं एवं सेवाओं के वास्तविक मूल्य को दर्शाता है। दुनियाभर में यह आर्थिक स्वास्थ्य का पसंदीदा सूचक है। अमूमन जीडीपी और जीवीए में मामूली अंतर

होता है तथा यह सब्सिडी को छोड़कर करों के शुद्ध असर को प्रतिबिंबित करता है। अप्रत्यक्ष कर संग्रहण जीडीपी को बढ़ाता है, जबकि सब्सिडी जीडीपी को कम करती है। ये दो चीजें आम तौर पर एक दूसरे को संतुलित करती हैं। दिसंबर तिमाही में जीवीए वृद्धि दर केवल 6.5 प्रतिशत रही है, जो जीडीपी से करीब दो प्रतिशत कम है। यह अंतर बीते दस साल में सबसे अधिक है। ऐसा सब्सिडी में बड़ी कमी (50 फीसदी से भी ज्यादा) तथा अप्रत्यक्ष कर संग्रहण में बड़ी बढ़ोतरी के कारण हुआ है। हमें इस पर विचार करना चाहिए कि क्या ऐसा एक बार हुआ है या आगे भी उतार-चढ़ाव बना रह सकता है। बीती तीन तिमाहियों में जीवीए वृद्धि 8.2 से घटते हुए 6.5 प्रतिशत के स्तर पर आ गयी है। अगर 2023-24 की कुल वृद्धि दर 7.3 या 7.5 प्रतिशत रहती है, तो जनवरी-मार्च की चौथी तिमाही में जीवीए वृद्धि दर छह प्रतिशत से नीचे रह सकती है। वह आंकड़ा मई के अंत में जारी होगा।

एक और पहेली उपभोग व्यय की वृद्धि दर से संबंधित है। यह जीडीपी का 55 प्रतिशत से बड़ा हिस्सा है। यह केवल तीन प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है, जो कई वर्षों में सबसे कम है। उपभोक्ता खर्च में बड़ी बढ़ोतरी के बिना उच्च वृद्धि को बरकरार नहीं रखा जा सकता है। यह उपभोक्ताओं की भावना, उनके वर्तमान व्यय और खर्च करने की योजना पर निर्भर करता है। उपभोक्ता भविष्य को लेकर तब आशावादी रहते हैं, जब उनकी रोजगार संभावनाएं अच्छी होती हैं। उच्च बेरोजगारी दर, विशेषकर शिक्षित युवाओं में, उपभोग खर्च को हतोत्साहित कर सकती है। हाल में 11 वर्षों के अंतराल के बाद घरेलू उपभोग सर्वेक्षण के आंकड़े सामने आये हैं। इस अवधि में औसतन उपभोग वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों में 164 और शहरी क्षेत्रों में 146 प्रतिशत रही है। इन आंकड़ों में मुद्रास्फीति को समायोजित नहीं किया गया है। यदि मुद्रास्फीति का संज्ञान लिया जाए, तो 11 वर्षों में उपभोग की वास्तविक वृद्धि दर ग्रामीण भारत में 40 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र में 34 प्रतिशत रह जाती है। इस प्रकार, राष्ट्रीय सैंपल सर्वे (एनएसएस) के आधार पर उपभोग वृद्धि लंबे समय से मात्र 3.5 प्रतिशत है। एनएसएस और केंद्रीय सांख्यिकी संगठन के उपभोग आंकड़ों में बड़ा अंतर है। फिर भी दो चश्मे से आंकड़ों को देखना और कुछ समानता पाना तथा मापन की खामियों को दूर करना जरूरी है।

छत्तीसगढ़ शासन

हमने बनाया है
हम ही संवारेंगे

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्री विष्णु देव साय
मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़

महतारी वंदन

महिला शक्ति का अभिनंदन

दिनांक 10 मार्च 2024 को दोपहर 12 बजे
योजना की पहली किस्त की राशि का अंतरण

प्रधानमंत्री **श्री नरेंद्र मोदी** द्वारा 70 लाख से अधिक महिलाओं
को 700 करोड़ रुपए डीबीटी के माध्यम से बैंक खातों में

विवाहित महिलाओं के खाते में सालाना
₹ 12 हजार

- छत्तीसगढ़ में महिलाओं के लिए आर्थिक आजादी का नया दौर
- अब छोटी- छोटी जरूरतों के लिए नहीं होगी दूसरों पर निर्भरता

मुख्यमंत्री कार्यालय का
व्हाट्सएप चैनल
सब्सक्राइब करने के लिए
यह क्यूआर कोड स्कैन करें

(डीडी न्यूज़ पर कार्यक्रम का सीधा प्रसारण)

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

संवाद- 39969/118

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.